1 राजा

1 काफी बूढ़ा होने की वजह से राजा
दाऊद की देह गर्म नहीं रहा करती थी।
2 इसलिए उसके नौकरों ने कहा, “हमारे
स्वामी राजा के लिए एक नवजवान कुँवारी
लायी जाए। वही उसकी देख-भाल करे और
उसके साथ सोए, ताकि उसकी देह का
तापमान सामान्य रहे।” 3 इसलिए उन्होंने
सारे इस्राएल देश में सुन्दर नवजवान लड़की
की तलाश की। अबीशग नामक शूनेमिन
को उन्होंने पाया और उसे राजा के पास
ले आए। 4 वह लड़की बहुत खूबसूरत थी
और दाऊद की सेवा करने में लग गयी।
लेकिन राजा ने उसके साथ कोई शारीरिक
सम्बन्ध नहीं रखा। 5 तब हागीत के बेटे ने
बड़े घमण्ड से ऐलान किया, “मैं राजा बन
जाऊँगा।” उसने अपने लिए रथ, घुड़सवार
और पचास आदमी अपने सामने रखने के
लिए तैयार किए। 6 उसके पिता ने यह कह
कर कभी उसे नाराज नहीं किया था, “ऐसा
तुमने क्यों किया” वह बहुत सुन्दर था और
अबशालोम के बाद पैदा हुआ था। 7 उसने
सरूयाह के बेटे योआब से और एब्यातार
से सलाह-मशविरा किया। उन्होंने पीछे से
उसकी मदद भी की। 8 लेकिन सादोक
पुरोहित यहोयादा का बेटा बनायाह, नातान
नबी, शिमी रेई और दाऊद के शूरवीरों ने
अदोनिय्याह को सहयोग न दिया 9 एनरोगेल
के पास जोहलेत नामक पत्थर के पास,
अदोनिय्याह ने भेड़-बैल और तैयार किए
हुए जानवर कुर्बान किए। उसने अपने भाई,
राजकुमारों और राजा के यहूदी कार्यकर्ताओं
को बुला लिया। 10 लेकिन उसने नातान
भविष्यद्वक्ता और बनायाह और शूरवीरों को
और अपने भाई सुलैमान को निमंत्रण न
दिया। 11 फिर नातान ने सुलैमान की माँ
बतशेबा से कहा, “क्या तुम्हें मालूम है
कि हग्गीत का बेटा अदोनिय्याह राजा बन
गया है और दाऊद राजा को मालूम नहीं
है। 12 इसलिए मेरी सलाह यह है कि तुम
आकर अपनी और अपने बेटे सुलैमान की
जान बचाओ। 13 तुम राजा दाऊद के पास
जाकर पूछो, कि उसने कसम खा कर अपनी
दासी से क्या कहा था कि उस का बेटा
सुलैमान गद्दी पर बैठेगा, फिर अदोनिय्याह
को राजा क्यों बनने दिया गया? 14 जिस
समय तुम राजा से सवाल पूछती होगी, पीछे
से आकर मैं इस बात का सबूत रखूँगा।”
15 फिर बतशेबा राजा के पास गयी, जहाँ बूढ़े
राजा दाऊद की सेवा में शूनेमिन अबीशग
लगी हुयी थी। 16 झुकते हुए बतशेबा ने राजा
को दण्डवत् किया। राजा ने पूछा कि वह
चाहती क्या है। 17 जवाब में वह बोली,
“मेरे स्वामी, आपने प्रभु की शपथ खा कर
मुझ से कहा था, ‘तुम्हारा बेटा सुलैमान,
मेरे बाद राजा बनेगा।’ 18 आपको मालूम
ही नहीं और अदोनिय्याह स्वयं राजा बन
चुका है। 19 उसने सभी राजकुमारों, एब्यातार
पुरोहित और योआब सेनापति को निमंत्रण
देकर बहुत से पशुओं को कुर्बान किया
है। उसने सुलैमान को न्यौता नहीं दिया है।
20 मेरे स्वामी, मेरे राजा सारा इस्राएल आपके
फ़ैसले की राह देख रहा है, कि आप आदेश
दें कि आपके बाद राजा कौन बनेगा। 21 यदि
ऐसा न हुआ तो आपके इस पृथ्वी पर से
चले जाने के बाद मुझे और मेरे बेटे सुलैमान
को अपराधी माना जाएगा।” 22 बतशेबा की

बातचीत के दौरान नातान नबी वहाँ पहुँच
गया। 23 राजा को बताया गया कि नातान
नबी हाज़िर है। राजा के सामने आते ही मुँह
के बल गिर कर उसने प्रणाम किया 24 नातान
ने कहा, “क्या यह आपकी आज्ञा थी कि
आपके बाद आपका पुत्र अदोनिय्याह राजा
बनेगा? 25 आज उसने तमाम पशु बलि करके
दावत में सभी राजकुमारों, सेनापतियों और
एब्यातार पुरोहित को बुलाया है। खाते पीते
समय वे नारा लगा रहे हैं - ‘अदोनिय्याह
राजा जीवित रहे।’ 26 लेकिन मुझे, सादोक
पुरोहित और यहोयादा के बेटे बनायाह
और सुलैमान को उसने निमंत्रण नहीं दिया
27 क्या ऐसा आपका फैसला था? आपने
तो अपने दास को यह बात नहीं बतायी
कि आपके बाद आपके राजासन पर कौन
बैठेगा” 28 दाऊद राजा बोला, “बतशेबा को
मेरे सामने लाओ।” तब बतशेबा, दाऊद
राजा के पास आयी। 29 राजा ने कसम खा
कर कहा, “प्रभु जो मेरी जान को सब
खतरों से आज तक बचाते आए हैं, 30 उनके
जीवन की शपथ, जैसा वचन मैं तुम को दे
चुका हूँ कि तुम्हारा बेटा सुलैमान मेरे बाद
राजा बनेगा, वैसा आज ही होकर रहेगा”
31 यह सुन बतशेबा ने झुक कर राजा को
दण्डवत् करते हुए कहा, “मेरे प्रभु राजा
दाऊद हमेशा तक जीवित रहें।” 32 तब राजा
ने आज्ञा दी, “मेरे पास सादोक पुरोहित,
नातान भविष्यद्वक्ता और यहोयादा के बेटे
बनायाह को बुलाया जाए।” वे सभी राजा
के सामने आए भी। 33 तब राजा ने आदेश
दिया, कर्मचारियों को साथ लो और मेरे बेटे
सुलैमान को मेरे खच्चर पर बैठा कर गीहोन
को ले जाओ। 34 उसे इस्राएल का राजा
नियुक्त करने के लिए सादोक पुरोहित और
नातान नबी अभिषेक करे। तभी नरसिंगा
बजाकर तुम सब कहना, ‘राजा सुलैमान सदा
ज़िन्दा रहे।’ 35 उसके पीछे-पीछे तुम सभी
इधर आना और वह आकर राजासन पर
बैठे। मेरे बदले में सुलैमान ही इस्राएल और
यहूदा पर राजा होगा, ऐसा निर्णय मैंने लिया
है।” 36 तब यहोयादा के बेटे, बनायाह ने
कहा “ऐसा ही हो। मेरे प्रभु राजा के प्रभु
परमेश्वर भी इस पर मोहर लगाएँ। 37 जिस
तरह से प्रभु मेरे मालिक राजा के साथ
रहे, उसी तरह से सुलैमान के संग भी रहें।
उस का राज्य मेरे मालिक दाऊद राजा के
राज्य से भी ज़्यादा बढ़ जाए।” 38 इसके
बाद सादोक पुरोहित, नातान भविष्यद्वक्ता
और यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों
तथा पलेतियों को साथ लेकर नीचे गए।
फिर सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर
पर चढ़ाकर गीहोन को चल दिए 39 तब
सादोक पुरोहित ने प्रभु के तम्बू में से तेल
भरा हुआ सींग लिया और सुलैमान का
राज्याभिषेक किया। तभी नरसिंगे फूँकने के
साथ लोगों ने बुलन्द आवाज़ में कहा, “राजा
सुलैमान जीवित रहे।” 40 बाँसुली बजाते और
खुशी मनाते हुए लोग सुलैमान के पीछे चल
पड़े। उनकी आवाज़ से धरती गूँज उठी थी
41 अदोनिय्याह और उसके मेंहमानों के खाना
खाने के बाद यह आवाज़ उनके कानों में
पड़ी। योआब ने पूछा, “नगर में हलचल और
चिल्लाहट का कारण क्या है?” 42 उस का
इतना कहना था कि एब्यातार पुरोहित का
बेटा योनातान आ पहुँचा। अदोनिय्याह उस
से बोला, “अन्दर आओ, तुम तो एक अच्छे
इन्सान हो और अच्छी खबर लाए होगे।”
43 योनातान ने अदोनिय्याह से कहा, “हमारे
स्वामी राजा दाऊद ने सुलैमान को राजा
बना दिया है। 44 राजा ने सादोक पुरोहित,
नातान नबी और यहोयादा के बेटे बनायाह

तथा करेतियों-पलेतियों को उसके साथ भेज
दिया। उन्होंने उसे राजा के खच्चर पर चढ़ाया
है। 45 सादोक पुरोहित और नातान नबी ने
गीहोन में सुलैमान का राज्याभिषेक किया
है। वे वहीं से ऐसा आनन्द करते हुए ऊपर
गए है और वहाँ हलचल मच गयी है। यह
जो कुछ तुम सुन रहे हो वही है 46 सुलैमान
राजराजासन पर बैठ रहा है। 47 फिर राजा के
कार्यकर्ता हमारे दाऊद राजा जी की बड़ाई
करते हुए कह रहे हैं, 'आपके प्रभु सुलैमान
का नाम आप से अधिक महान करे और
आपके राज्य से अधिक उस का राज्य हो।'
यह सुन दाऊद राजा ने पलंग पर ही प्रभु
को धन्यवाद दिया 48 फिर राजा ने यह भी
कहा, इस्राएल के प्रभु की बड़ाई हो, जिन्होंने
आज मेरी आँखों के सामने सुलैमान को गद्दी
पर बैठा दिया है।" 49 तभी अदोनिय्याह के
सभी मेंहमान डर से काँप उठे और भाग
खड़े हुए। 50 सुलैमान से डर कर अदोनिय्याह
उठा और वेदी के सींगों को जाकर पकड़
लिया। 51 सुलैमान को यह खबर लग गयी
कि डर कर अदोनिय्याह ने वेदी के सींगों
को पकड़ कर कहा कि सुलैमान यह प्रण करे
कि उसे जान से मार न डालेगा। 52 सुलैमान
बोला, "यदि वह अपने आपे में आ जाए और
सही रवैया दिखाए तो कोई उस का बाल
बाँका न करने पाएगा, लेकिन यदि उसने
कोई चालबाजी की, तो वह अपनी जान से
हाथ धो बैठेगा।" 53 तब राजा सुलैमान ने
लोगों को भेजा कि वे अदोनिय्याह को वेदी
के पास से उतार ले आएँ। वह वहाँ से उतर
आया और सुलैमान को दण्डवत् किया। तब
सुलैमान ने उस से कहा, "तुम अपने घर चले
जाओ।"

2 मरते समय दाऊद ने अपने बेटे सुलैमान
से कहा, 2 "मेरे मरने का समय आ
चुका है इसलिए तुम दिलेरी से हर समय
का मुकाबला करना 3 प्रभु ने तुम्हारे सुपुर्द
जो कुछ किया है, उसकी रक्षा करना। उनके
बताए गए रास्ते पर चलते जाना। मूसा के
नियमशास्त्र के अनुसार सब कुछ करना। तब
तुम अपने कार्यों में कामयाब होगे। 4 मेरे बारे
में प्रभु की कही गयी बात पूरी हो, वह यह थी
- 'यदि तुम्हारी औलाद अपनी जीवन शैली के
बारे में सावधान रहे और अपने सारे मन से
सच्चाई के साथ हर दिन जिए, तब इस्राएल के
राजासन पर बैठने वाले की, तुम्हारे परिवार
में कभी कमी नहीं होगी। 5 फिर तुम खुद
जानते हो, कि सरूयाह का बेटा योआब मेरे
साथ कैसे पेश आया था। उसने नेर के पुत्र
अब्नेर, येतेर के पुत्र अमासा, इस्राएल के
इन दोनों सेनापतियों के साथ कैसा व्यवहार
किया। उसने इन दोनों की जान ली थी। उसने
शान्ति के समय युद्ध का खून बहा कर, उस
से अपनी कमर के पटुके और जूतियों को
भिगोया था। 6 इसलिए तुम अपनी समझ से
काम लेना और उस बुज़ुर्ग की मौत शान्ति से
मत होने देना। 7 गिलादी बर्जिल्लै के बेटों पर
कृपा बनाए रखना। वे तुम्हारी मेंज़ पर खाने
के लिए बैठें। इसलिए कि जब मैं तुम्हारे भाई,
अबशालोम के सामने से भाग रहा था, उन्होंने
मेरे साथ अच्छा बर्ताव किया था। 8 तुम्हारे
पास बिन्यामीनी गेरा का बेटा बहुरीमी शिमी
रहता है। जिस दिन मैं महनैम को जा रहा
था, उसने मुझे शाप दिया था। लेकिन जब
वह मेरी भेंट के लिए यरदन आया, तब मैंने
यह प्रण कर लिया था कि मैं उसे तलवार
से न मारूँगा। 9 लेकिन अब तुम उसे छोड़ना
नहीं, तुम तो अक्लमन्द हो। तुम्हें मालूम होगा
कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना
चाहिए। उस बुज़ुर्ग का खून बहा कर उसे
अधोलोक में पहुँचा देना" 10 इसके बाद,

दाऊद का देहान्त हो गया और दाऊदपुर में
उसे दफ़ना दिया गया। 11 चालीस साल तक
दाऊद ने इस्राएल पर राज्य किया था। सात
साल उसने हेब्रोन और तैंतीस साल यरूशलेम
में राज्य किया था 12 इसके बाद सुलैमान
अपने पिता दाऊद की गद्दी पर बैठा और उस
का राज्य बहुत मज़बूत भी हो गया 13 एक
दिन हागीत का बेटा अदोनिय्याह सुलैमान
की माँ बतशेबा के पास आया। बतशेबा ने
पूछा, “क्या तुम अच्छी मनसा से आए हो?”
14 अदोनिय्याह ने जवाब में कहा, “हाँ”।
वह बोला, “मुझे कुछ कहना है।” बतशेबा
बोली, “कहो।” 15 वह बोला, “जैसा कि
तुम्हें मालूम है कि मैं राजा बन गया था।
सभी इस्राएलियों की दृष्टि मेरी तरफ़ थी, कि
मैं राज्य करूँ। लेकिन अब राज्य मेरे भाई
का हो चुका है। प्रभु ने ही दिया है। 16 मेरी
तुम से एक बिनती है,“मना न करना।” उसने
कहा, “कहते जाओ।” 17 उसने कहा, “राजा
सुलैमान से कह कर शूनेमिन अबीशग से मेरा
विवाह करा दो।” 18 बतशेबा का उत्तर था,
“ठीक है, मैं सुलैमान से कहूँगी।” 19 बतशेबा
अदोनिय्याह के लिए सिफ़ारिश करने गयी
और राजा अपनी माँ से मिलने के लिए उठा,
दण्डवत् करके फिर राजासन पर बैठ गया।
फिर राजा ने अपने पास दाहिनी ओर ही
एक और राजासन रखवाया। जहाँ वह बैठ
गयी 20 तब बतशेबा बोली, “बेटा, मैं तुम से
एक विनती करती हूँ, लेकिन नामंज़ूर मत
करना।” राजा बोल उठा, “माँ, मांगिए, मैं
मना न करूँगा।” 21 वह बोली, “शूनेमिन का
ब्याह, तेरे भाई अदोनिय्याह से करा दिया
जाए।” 22 राजा सुलैमान ने अपनी माँ से पूछा,
“तुम केवल अबीशग ही को क्यों माँग रही
हो? वह मेरा बड़ा भाई है इसलिए उसके
लिए राज्य भी माँगो इतना ही नहीं एब्यातार
पुरोहित और सरूयाह के पुत्र योआब के लिए
भी माँगो।” 23 राजा सुलैमान ने प्रभु की शपथ
खा कर कहा, “यदि अदोनिय्याह ने यह बात
अपनी जान पर खेल कर कही हो, तो प्रभु
मुझ से वैसा ही नहीं, लेकिन उस से ज़्यादा
करें। 24 प्रभु जिन्होंने मुझे मज़बूत किया और
मेरे पिता की राजगद्दी पर स्थापित किया
है, मेरे घर को अपने कहने के आधार पर
बसाया है, अदोनिय्याह आज ही खत्म कर
दिया जाएगा” 25 इसलिए राजा सुलैमान ने
यहोयादा के बेटे बनायाह को भेजा, जिस ने
जाकर उसे जान से मार दिया 26 तब राजा
ने एब्यातार पुरोहित से कहा, “अनातोत में
अपनी ज़मीन को जाओ, क्योंकि मौत की
सज़ा के लायक हो। आज मैं तुम्हें नहीं
मारूँगा, क्योंकि तुम मेरे पिता दाऊद के
सामने प्रभु का सन्दूक उठाया करते थे। साथ
ही मेरे पिता के दुखों में तुम उनके साथ
थे 27 तब सुलैमान ने एब्यातार को प्रभु के
पुरोहित के पद से उतार दिया। इस तरह से
प्रभु ने एली के वंश के बारे में शीलो में जो
कहा था, वह पूरा हुआ। 28 यह खबर योआब
तक पहुँची। योआब अबशालोम के पीछे
नहीं लेकिन अदोनिय्याह के पीछे ज़रूर हो
लिया था। तब योआब प्रभु के तम्बू को लेकर
भागा और वेदी के सींगो को जाकर पकड़
लिया 29 जब राजा सुलैमान को योआब के
प्रभु के तम्बू जाने और वेदी के सीगों को
पकड़ने का समाचार मिला, तब सुलैमान
ने यहोयादा के बेटे बनायाह को यह कह
कर भेजा कि वह उसे मार डाले। 30 तब
बनायाह ने प्रभु के तम्बू के पास जाकर उस
से कहा, “राजा का आदेश है कि निकल
आओ।” उसने उत्तर दिया, “नहीं, मैं यहीं मर
जाऊँगा।” तब बनायाह ने लौट कर राजा को
यह संदेश दे दिया। 31 तब राजा ने उस से

कहा, उसके कहने के आधार पर उसे खत्म
कर डालो और दफ़ना दो। ऐसा यदि किया
जाए तो जो खून योआब ने बेकसूरवारों का
बहाया था, उसके दोष से मैं और मेरे पिता
का घराना छूट जाएगा। 32 और प्रभु उसके
सिर पर वह गुनाह[a] लौटा देंगे, क्योंकि उसने
मेरे पिता दाऊद के बिना जाने दो भले व्यक्ति
नेर के बेटे अब्नेर और येतेर के बेटे अमासा
की जान ली थी। 33 इस तरह से योआब के
नाम[b] पर और उसके वंश पर वह अपराध
सदा तक रहेगा। लेकिन दाऊद उसके वंश
और उसके राज्य पर प्रभु की तरफ़ से सदा
तक शान्ति होगी 34 इसके बाद यहोयादा के
बेटे बनायाह ने योआब को खत्म कर दिया।
उसको जंगल में उसी के घर में दफ़ना दिया
गया। 35 तब सुलैमान ने उसकी जगह पर
यहोयादा के बेटे बनायाह को मुख्य सेनापति
बना दिया। एब्यातार की जगह पर सादोक
को पुरोहित[c] नियुक्त किया 36 फिरा राजा ने
शिमी को बुलाकर कहा कि वह यरूशलेम
ही में अपना घर बनवा कर रहे और बाहर न
जाए 37 यदि वह किद्रोन नाले के पार जाएगा,
तो बेशक मार दिया जाएगा। तुम अपनी मौत
के खुद ज़िम्मेंदार होंगे। 38 शिमी राजा से
बोला, "आपकी बात भली है और मैं वैसा
ही करूँगा जैसा आपने कहा है।" इसके बाद
बहुत समय तक शिमी यरूशलेम ही में रहा
39 तीन साल के बाद शिमी के दो दास भाग
कर गत नगर के राजा माका के बेटे आकीश
के पास चले गए। शिमी को यह खबर मिल
भी गयी 40 इसलिए शिमी अपने गदहे पर
काठी कसकर उन्हें ढूँढने गत को आकाश
तक पहुँच गया और अपने दासों को अपने
साथ वापस ले आया 41 जब सुलैमान राजा
को यह समाचार मिला कि शिमी यरूशलेम
जाकर लौट आया है 42 तो उसने शिमी को
बुलाकर कहा, "क्या मैंने प्रभु की शपथ दिला
कर तुम से यह न कहा था, कि जिस दिन
नगर छोड़कर तुम कहीं जाओ, तुम ज़िन्दा
नहीं बचोगे, और क्या तुमने नहीं कहा था
कि तुम्हें मेरी बात पसन्द आयी है? 43 फिर
तुमने उल्टा काम क्यों किया?" 44 राजा ने
शिमी से कहा, "मेरे पिता के साथ तुम्हारे
द्वारा की गयी सारी बुराई तुम्हें याद होगी।
इसलिए प्रभु तुम्हें उस का बदला देंगे। 45 मैं
आशीषित रहूँगा और दाऊद का राज्य प्रभु के
सामने सदैव मज़बूत रहेगा।" 46 तब सुलैमान
के आदेश से यहोयादा के पुत्र बनायाह ने उसे
जान से मार डाला। इस तरह सुलैमान का
राज्य स्थिर होता गया।

3 राजा सुलैमान ने फ़िरौन की पुत्री
से विवाह किया और उसे दाऊदपुर
लाकर, तब तक वहीं रखा, जब तक प्रभु
का भवन, अपना घर और यरूशलेम शहर
की चाहरदीवारी न बनायी। 2 लोग ऊँची
जगहों पर कुर्बानी चढ़ाया करते थे। उन
दिनों तक प्रभु के नाम का कोई भवन नहीं
बना था 3 अपने पिता दाऊद की विधियों
पर सुलैमान चलता तो रहा, लेकिन ऊँची
जगहों पर बलि चढ़ाता और धूप जलाया
करता था। 4 विशेष ऊँचा स्थान गिबोन में
था, जहाँ पर जाकर सुलैमान ने एक हज़ार
होमबलि चढ़ाए। 5 वहीं रात में स्वप्न में दर्शन
देकर प्रभु ने कहा, "तुम जो चाहो, मुझ से
माँगो, मिलेगा।" 6 सुलैमान बोला, अपने दास
दाऊद पर आप करुणा करते रहे हैं, क्योंकि
वह आपकी उपस्थिति में खुद को रख कर
सच्चाई, खराई और मन की सिधाई से जीता
रहा। उस पर आपने यहाँ तक दया की, कि

[a] 2.32 अपराध [b] 2.33 सिर [c] 2.35 याजक

उसकी गद्दी पर बैठ कर राज्य करने के लिए
एक बेटा दिया। 7 अब हे प्रभु परमेश्वर,
दाऊद की जगह आपने मुझे गद्दी पर बैठाया
है। मैं उम्र में कम हूँ और समझ की कमी
है। 8 मैं आपका दास, आपके चुने हुए लोगों
के बीच में हूँ। वे संख्या में बहुत हैं 9 आप
मुझे अपनी प्रजा का इन्साफ़ करने के लिए
समझने की ऐसी योग्यता दें, ताकि मैं भले-बुरे
में भेद कर सकूँ। आपकी इतनी बड़ी प्रजा
का इन्साफ़ कौन कर सकता है?" 10 ऐसे
आशीर्वाद की माँग को सुन कर प्रभु खुश
हुए। 11 तब प्रभु ने कहा, "इसलिए कि तुमने
यह वरदान माँगा है, इसलिए सुनो, 12 मैं
तुम्हारी बिनती के अनुसार करता हूँ। मैं तुम्हें
बुद्धि और विवेक से भरा हुआ मन देता हूँ।
तुम्हारी तरह न कोई पहले हुआ था और
न कभी होगा 13 जो कुछ तुमने नहीं माँगा,
अर्थात् दौलत और यश - वह भी मैं तुम्हें दूँगा।
तुम्हारे जीवन भर कोई राजा तुम्हारी तरह
नहीं होगा। 14 यदि तुम अपने पिता दाऊद की
तरह मेरे रास्ते पर चलते हुए मेरी विधियों
और आज्ञाओं को मानो, तो मैं तुम्हारी उम्र
बढ़ाऊँगा 15 जाग जाने पर, सुलैमान जान
पाया कि यह स्वप्न था। फिर यरूशलेम
जाकर वहाँ प्रभु के वाचा के सन्दूक के सामने
खड़े होकर होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।
साथ ही उसने उन सभी के लिए दावत भी
की। 16 एक दिन दो महिलाएँ जो यौन व्यापार
में लिप्त थीं, राजा के सामने आयीं। 17 उन में
से एक महिला ने कहा, "हे मेरे स्वामी। यह
महिला और मैं एक ही घर में रहते हैं। मैंने एक
बच्चे को जन्म दिया। 18 मेरे जनने के तीन दिन
बाद, इस महिला ने भी एक बच्चे को जन्म
दिया। हम दोनों के अलावा घर में और कोई
नहीं था 19 रात में सोते समय इस महिला का
बालक इसके नीचे दब कर मर गया 20 आधी
रात को जब मैं सो रही थी, इसने मेरा लड़का
मेरे पास से उठा कर अपनी छाती से लगा
लिया। मरा हुआ अपना बच्चा इसने मेरे सीने
से लगा दिया 21 तड़के सुबह जब मैंने बच्चे
को दूध पिलाना चाहा, तब मैंने उसे मरा हुआ
पाया। ध्यान से देखने पर यह मालूम पड़ा कि
यह बच्चा मेरा नहीं है।" 22 तब दूसरी महिला
बोली, "नहीं, ज़िन्दा बच्चा मेरा है और मरा
हुआ तुम्हारा।" परन्तु उसने कहना जारी रखा
कि नहीं मरा हुआ तुम्हारा और ज़िन्दा वाला
मेरा बेटा है।" राजा के सामने दोनों महिलाएँ
इस तरह बहस करती रहीं। 23 तब राजा ने
कहा, "एक कहती है कि जीवित पुत्र मेरा
है और मरा दूसरी का, दूसरी कहती है, मरा
वाला बालक मेरा नहीं है, मेरा तो जीवित
वाला है।" 24 फिर राजा बोला, "मुझे एक
तलवार दो।" इसलिए राजा को एक तलवार
दी गयी। 25 तब राजा ने कहा, "ज़िन्दा बच्चे
के दो टुकड़े करके इसको एक और दूसरा
उसको दे दो।" 26 तुरन्त जीवित बच्चे की
वास्तविक माँ का मन स्नेह से भर गया और
वह बोल उठी, "मेरे मालिक, उसे न मारिए,
बच्चे को उसी को दे दीजिए।" दूसरी महिला
पहिली वाली से बोली, "वह न तो मेरा और न
तुम्हारा, उसके दो हिस्से किए जाएँ।" 27 तब
राजा ने कहा, "पहली महिला को जीवित
बच्चा दे दिया जाए। उसे कोई नुकसान न
पहुँचाया जाए, क्योंकि उसकी माता वही
है।" 28 राजा के इस न्याय का समाचार पूरे
इस्राएल में फैल गया। लोग राजा से डरने
लगे, क्योंकि उन्होंने पाया, कि उसके न्याय
करने के लिए उसके पास प्रभु का बुद्धि है।

4 पूरे इस्राएल के ऊपर राजा सुलैमान
राज्य कर रहा था 2 उसके गवर्नरों के
नाम ये थे : सादोक का बेटा अजर्याह

याजक, 3 और शीशा के बेटे एलीहोरोप
और अहिय्याह प्रधान मंत्री थे। अलीहूद का
बेटा यहोशापात इतिहास लिखने वाला था।
4 यहोयादा का बेटा बनायाह मुख्य सेनापति
था। सादोक और एब्यातार पुरोहित थे।
5 नातान का बेटा अजर्याह भण्डारियों के
ऊपर था। नातान का बेटा जाबूद पुरोहित
और राजा का दोस्त था 6 अहीशार राज
परिवार के ऊपर था और अब्दा का बेटा
अदोनीराम बेगारों के ऊपर प्रधान था।
7 राजा सुलैमान के बारह भण्डारी थे, ये
सभी इस्राएल पर अधिकारी थे और राजा
तथा उसके परिवार के भोजन का प्रबन्ध
किया करते थे। एक आदमी हर साल
अपने-अपने ठहराए महीने में इन्तज़ाम करता
था 8 उनके नाम ये थे : एप्रैम के पहाड़ी
देश में बेनहूर 9 माकस, शाल्बीम, बेतशेमेंश,
एलोनबेथानान में बन्देकेर, 10 अरूब्बोत में
बेन्हेसेद, जिस के अधिकार में सोको और
हेपेर का सारा देश था। 11 दोर के सारे ऊँचे
देश में बेनबीनादाब जिस की पत्नी सुलैमान
की बेटी तापत थी। 12 अलीहूद के बेटे बाना
के अधिकार में तानाक, मगिद्दो और बेतशान
का वह सब क्षेत्र था, जो सारतान के पास,
यिज़्रेल के नीचे और पेतशान से लेकर अबेल
महोला तक अर्थात् योकमाम की दूसरी तरफ़
तक है। 13 गिला के रामोत में बेनगेबेर था,
जिस के में मनश्शेई याईर के गिलाद के
गाँव थे। इसी के अधिकार में बाशान के
अर्गोब का देश था, जिस में शहरपनाह और
पीतल के बेड़े वाले साठ बड़े-बड़े नगर थे
14 इद्दा के बेटे अहीनादाब के नियंत्रण में
महनैम था। 15 अहीमास नप्ताली में था, जिस
का विवाह सुलैमान की बेटी बासमत से
हुआ था 16 आशेर और आलोत में हूशै का
बेटा बाना 17 इस्साकार में पारूह का बेटा
यहोशापात 18 बिन्यामीन में एला का बेटा
शिमी था। 19 अरी का बेटा गेबेर गिलाद में
अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान
के राजा आगे के देश में था, इस सारे क्षेत्र का
वही भण्डारी था 20 यहूदा और इस्राएल के
लोग बड़ी संख्या में थे और खाते-पीते खुश
थे। 21 सुलैमान का राज्य महानद से लेकर
पलिश्तियों के देश और मिस्र की सीमा तक
के सभी राज्यों के ऊपर था। उसके जीवन
भर वे लोग भेंट लाते थे और आज्ञा मानते
थे। 22 सुलैमान की रसोई में एक दिन में तीस
कोर मैदा, साठ कोर आटा, 23 दस तैयार
किए हुए बैल, और मैदान में से बीस बैल, सौ
भेड़-बकरी के अलावा हिरन, चिकारे, मृग
और पक्षी का उपयोग होता था 24 महानद के
इस पार के सारे देश पर अर्थात् तिप्सह से
लेकर अज्जा तक जितने राजा थे उन सभी पर
सुलैमान शासन करता और आस-पास रहने
वालों से अच्छे सम्बन्ध रखता था 25 दान
से लेकर बेर्शेबा तक के सब यहूदी और
इस्राएली अपने-अपने अंगूर के बगीचे में और
अंजीर के पेड़ के नीचे सुलैमान के जीवन
भर बिना डर के रहा करते थे 26 उसके रथ
के घोड़ों के लिए चालीस हज़ार घुड़साल थे
और बारह हज़ार घुड़सवार। 27 वे भण्डारी
अपने-अपने महीने में राजा सुलैमान के लिए
और जितने उसके साथ खाना खाते थे, उन
सभी के लिए खाने का बन्दोबस्त किया
करते थे। वहाँ किसी तरह की कमी न हुआ
करती थी। 28 जौ और पुआल की जो ज़रूरत
घोड़ों और तेजी से भागने वाले घोड़ों के लिए
हुआ करती थी, एक-एक जन उसे पहुँचा
दिया करता था। 29 प्रभु ने सुलैमान को बहुत
समझ और बुद्धि दी। उसके मन में समुद्र
के किनारे की बालू के कणों के बराबर
असंख्य गुण दिए। 30 पूर्व दिशा के देश के

सभी निवासियों और मिस्रियों की बुद्धि से
बढ़ कर बुद्धि उसके पास थी। 31 वह और
सभी लोगों से यहाँ तक कि एतान, एज़्रेही,
हेमान, माहोल के बेटे कलकोल और ददी
से ज़्यादा बुद्धिमान था। आस-पास के सभी
राष्ट्रों में उस का नाम फैल गया। 32 उसने तीन
हज़ार नीतिवचन कहे थे और एक हज़ार पाँच
गीत भी बनाए थे। 33 फिर उसने लबानोन
के देवदारुओं से लेकर भीत में से उगते
हुए ज़ूफ़ा तक के सभी पेड़ों की चर्चा और
पशुओं पक्षियों और रेंगनेवाले जानवरों और
मछलियों के बारे में जानकारी दी। 34 और
देश-देश के सभी राजाओं कीओर से जिन्होंने
सुलेमान की बुद्धि की बड़ाई सुनी, उसके ज्ञान
की बातों को सुनने आया करते थे।

5 सोर के राजा हीराम ने सुना था कि
सुलैमान अभिषिक्त होकर अपने पिता
की जगह पर राजा बनाया गया है। इसलिए
उसने अपने संदेशवाहक उसके पास भेजे।
दाऊद के जीवनकाल तक हीराम उस का
दोस्त था। 2 सुलैमान ने हीराम के पास यह
समाचार भेजा, “तुम्हें मालूम है, 3 कि मेरे
पिता अपने प्रभु परमेश्वर के नाम पर एक
भवन इसलिए न बनवा सके क्योंकि वह
तब तक तमाम युद्धों में उलझे रहे, जब तक
प्रभु ने उनके दुश्मनों को धूल नहीं चटा दी।
4 लेकिन अब मेरे प्रभु परमेश्वर ने मुझे चारों
तरफ़ से आराम दिया है। अब न तो कोई
दुश्मन है और न ही कोई मुसीबत। 5 मैंने
इरादा किया है कि मैं अपने प्रभु परमेश्वर
के लिए एक भवन बनवाऊँ। यह इसलिए कि
मेरे पिता से प्रभु परमेश्वर ने कहा था कि वह
भवन को न बनाने पाएँगे, लेकिन उनका बेटा
ही बनवा पाएगा।” 6 इसलिए अब तुम मेरे
लिए लबानोन से देवदार काटने की अनुमति
दो। मेरे कर्मचारी तुम्हारे कर्मचारियों के साथ
रहेंगे। तुम जो मज़दूरी निश्चित करोगे, वह
तुम्हारे कर्मचारियों को दूँगा। तुम को मालूम
है कि सिदोनियों की तरह लकड़ी काटने
का भेद हम लोगों में से किसी को नहीं
मालूम है।” 7 सुलैमान की सुन कर हीराम
को बहुत खुशी हुयी और कहा, “आज प्रभु
को धन्यवाद, जिन्होंने दाऊद को एक बड़े
देश पर शासन करने के लिए समझदार
बेटा दिया है।” 8 तब हीराम ने सुलैमान के
पास यह संदेश भेजा, “तुम्हारी, कही बात
मेरी समझ में आ गयी है। देवदार और
सनौवर की लकड़ी के बारे में तुम जो कुछ
कहोगे, मैं करूँगा। 9 मेरे कर्मचारी लकड़ी
को लबानोन से समुद्र तक पहुँचाएँगे। फिर मैं
उनके बेड़े बनवा कर, जो जगह तुम मेरे लिए
ठहराओगे, वहीं समुद्र के रास्ते से उनको
पहुँचवा दूँगा। वहीं मैं उन्हें खोलकर डलवा
दूँगा और तुम उन्हें ले लेना। तुम मेरे परिवार
के लिए खाना देकर मेरी इच्छा पूरी करना।”
10 इस तरह हीराम ने सुलैमान की इच्छा
के अनुसार उसको देवदार और सनौवर की
लकड़ी मुहैया करायी। 11 सुलैमान ने हीराम
के परिवार के खाने के लिए उसे बीस हज़ार
कोर गेहूँ और बीस कोर पेरा हुआ तेल
दिया। इस तरह सुलैमान हीराम को हर साल
दिया करता था। 12 प्रभु ने सुलैमान को अपने
वायदे के मुताबिक बुद्धि दी। हीराम और
सुलैमान के बीच मेल बना रहा और दोनों ने
आपस में वाचा भी बाँध ली 13 राजा सुलैमान
ने सारे इस्राएल में से तीस हज़ार मजदूरों को
काम पर लगाया। 14 उन्हें लबानोन पहाड़ी
पर बारी-बारी से, महीने-महीने दस हज़ार भेज
दिया करता था। वे लोग एक महीना लबानोन
में और दो महीने घर पर रहा करते थे। बेगारों
के ऊपर निगरानी का काम अदोनीराम को

सौंपा गया। 15 सुलैमान के सत्तर हज़ार बोझ
ढोने वाले और पहाड़ पर अस्सी हज़ार पेड़
काटने वाले और पत्थर निकालने वाले थे।
16 इन्हें छोड़कर सुलैमान के तीन हज़ार तीन
सौ प्रधान थे, जो काम करने वालों पर निगाह
रखते थे। 17 फिर राजा के आदेश से बड़े-बड़े
कीमती पत्थर इसलिए खोद कर निकाले
गए, ताकि भवन की नींव गढ़े हुए पत्थरों से
डाली जाए। 18 इसलिए सुलैमान के कारीगरों
और हीराम के कारीगरों और गबालियों ने
उनको गढ़ा। भवन को बनाने के लिए उन्होंने
पत्थर और लकड़ी भी तैयार की।

6 इस्राएलियों के मिस्र देश की गुलामी के
चार सौ अस्सी साल बाद, जब सुलैमान
इस्राएल पर राज्य करने का चौथा साल
ही था, जीव नाम के दूसरे महीने में उसने
प्रभु के भवन को बनाना शुरू किया 2 इस
भवन की लम्बाई साठ हाथ चौड़ाई बीस
हाथ ऊँचाई तीस हाथ की थी। 3 भवन के
मन्दिर के सामने के बरामदे की लम्बाई बीस
हाथ की थी। मतलब यह कि भवन की
चौड़ाई के बराबर थी। बरामदे की चौड़ाई
जो भवन के सामने थी, वह दस हाथ की
थी। 4 फिर उसने भवन में चौखट सहित
जालीदार खिड़कियाँ बनाई। 5 उसने भवन के
आस-पास की दीवारों से सटे हुए और मन्दिर
को पवित्रस्थान और परम पवित्र स्थान की
दोनों दीवारों के आस-पास उसने मंज़िलें
और कोठरियाँ बनायीं। 6 सब से नीचे वाली
मंज़िल की चौड़ाई पाँच हाथ और बीच वाली
को छै हाथ और ऊपर वाली की सात हाथ
की थी, क्योंकि उसने भवन के आस-पास
दीवार को बाहर की ओर कुर्सीदार बनाया
था। ऐसा इसलिए ताकि कड़ियाँ भवन की
दीवारों को पकड़े न हों 7 भवन ऐसे पत्थरों
से बनाया गया, जो वहाँ लाए जाने से पहले
गढ़े गए थे। भवन बनाते समय हथौड़े, बसूली
या किसी और तरह के लोहे के औज़ार की
आवाज़ तक नहीं आयी थी। 8 बाहर की
बीच वाली कोठरियों का दरवाजा भवन की
दाहिनी ओर था। लोग चक्करदार सीढ़ियों पर
होकर बीच वाली कोठरियों में जाते, और
वहाँ से ऊपर वाली कोठरियों पर जाया करते
थे। 9 भवन जो तैयार किया गया, उसकी
छत, देवदार की कड़ियों और तख्तों से बनी
थी 10 पूरे भवन से लगी हुयी जो मंज़िलें उसने
बनायीं, वे पाँच हाथ ऊँची थीं। वे देवदार
की कड़ियों के द्वारा भवन से मिलायी गयी
थीं। 11 तब प्रभु का संदेश सुलैमान के पास
पहुँचा 12 “यह भवन तो तुम बना रहे हो,
लेकिन यदि तुम मेरी विधियों, नियमों और
आज्ञाओं को मानोगे, तो जो बातें मैंने तुम्हारे
बारे में तुम्हारे पिता दाऊद से कहीं थीं, उन्हें
मैं पूरा करूँगा। 13 इस्राएलियों के बीच मेरी
उपस्थिति रहेगी। मैं अपने लोगों को छोड़ूँगा
नहीं।” 14 इस तरह से सुलैमान ने भवन का
काम पूरा किया। 15 भवन की दीवारों पर
अन्दर की तरफ़ देवदार की तख्ताबन्दी की।
भवन के फर्श से छत तक दीवारों पर अन्दर
की ओर लकड़ी की तख्ताबन्दी की। भवन
के फर्श को उसने सनौवर के तख्तों से बनाया
16 इमारत के पीछे की ओर उसने बीस हाथ
की दूरी पर फर्श से ले दीवारों के ऊपर तक
देवदार के तख्तों को लगाया। इस तरह उसने
परमपवित्र स्थान के लिए भवन की एक
भीतरी कोठरी बनवायी। 17 उसके सामने का
भवन यानि कि मन्दिर की लम्बाई चालीस
हाथ की रखी। 18 मन्दिर की दीवारों के ऊपर
अन्दर की तरफ़ देवदार की लकड़ी के तख्ते
लगाए। उसमें कलियाँ और फूल खुदे हुए
थे। पत्थर बिल्कुल नहीं दिखता था, केवल

देवदार ही देवदार दिखता था 19 भवन के
अन्दर उसने एक पवित्र स्थान प्रभु की वाचा
का सन्दूक रखने के लिए बनवाया 20 उस
पवित्र स्थान की लम्बाई चौड़ाई और ऊँचाई
बीस हाथ की थी। उस पर उसने शुद्ध सोना
मढ़वाया और वेदी की तख्ताबन्दी देवदार
से की। 21 फिर सुलैमान ने भवन को अन्दर
से शुद्ध सोने से मढ़वा दिया। उसने पवित्र
स्थान के सामने सोने की साँकलें लगवायीं
और उसे भी सोने से मढ़वा दिया। 22 उसने
सम्पूर्ण मन्दिर को सोने से मढ़वा दिया। वेदी
को जो पवित्र स्थान में थी, उसने सोने से
मढ़वा दिया 23 उसने पवित्र स्थान में दस-दस
हाथ ऊँचे जैतून की लकड़ी के दो करूब
बना कर रख दिए। 24 एक करूब का एक
पंख पाँच हाथ का था और दूसरा पंख भी
उतनी ही लम्बाई का था। एक पंख के सिरे
से दूसरे पंख के सिरे तक लम्बाई दस हाथ
थी। 25 दूसरा करूब दस हाथ का था और
दोनों करूब एक आकार के और एक नाप
के थे। 26 दोनों करूबों की ऊँचाई दस हाथ
की थी 27 उसने करूबों को अन्दर वाली
जगह में रखवा दिया। करूबों के पंख इस
तरह फैले हुए थे कि एक करूब का पंख
एक दीवार से और दूसरे का एक पंख दूसरी
दीवार से लगा हुआ था। दूसरे दो पंख भवन
के बीच में एक दूसरे को छूते थे। 28 उसने
करूबों को सोने से मढ़वा दिया 29 उसने
भवन की दीवारों पर बाहर और अन्दर
चारों तरफ़ करूब, खजूर और खिले हुए
फूल खुदवाए। 30 भवन के अन्दर और बाहर
वाली कोठरी के फर्श भी सुलैमान ने सोने
से मढ़वा दिए। 31 पवित्र स्थान के दाखिल
होने वाले दरवाज़े के लिए उसने जैतून की
लकड़ी के दरवाज़े लगाए और चौखट के
सिरहाने और बाजुओं की बनावट पंचकोणी
थी। 32 दोनों ही दरवाज़े जैतून की लकड़ी
से बनवाए गए। उनमें करूब, खजूर के पेड़
और खिले हुए फूल खुदवाए और सोने से
मढ़वाया। करूबों और खजूरों के ऊपर सोना
मढ़वाया गया। 33 इस तरह से भवन के भीतर
दाखिल होने वाले दरवाज़े के लिए जैतून की
लकड़ी के चौखट के चौकोर बाजू बनाए।
34 सनौवर की लकड़ी से दोनों दरवाज़े बने
थे। एक दरवाज़ा दो पल्लों से बना था। दूसरे
दरवाज़े के दो पल्ले पलट कर दोहरे हो जाया
करते थे। 35 इन दरवाज़ों पर करूब और
खजूर के पेड़ और खिले हुए फूल खुदवाए
और खुदे हुए काम पर उसने सोना मढ़वाया
36 अन्दर वाले आँगन के घेरे को गढ़े हुए
पत्थरों के तीन रद्दे और एक परत देवदार
की कड़ियाँ लगा कर बनाया गया 37 चौथे
साल के जीव महीने में प्रभु के भवन[a] की
आधारशिला रखी गयी। 38 ग्यारहवें साल के
बूल महीने में मन्दिर[b] बन गया। इस तरह
सात साल बनने में लग गए।

7 सुलैमान के अपने महल के बनाए
जाने में तेरह साल लगे थे। 2 उसके
लबानोनी महल की लम्बाई सौ हाथ, चौड़ाई
पचास हाथ और ऊँचाई तीस हाथ की थी।
वह देवदार के खम्भों की चार लाईनों पर
बनाया गया और खम्भों पर देवदार की
कड़ियाँ रखी गयीं। 3 पैंतालीस खम्भों के
ऊपर देवदार से बनी छत वाली कोठरियाँ
बनायी गयीं। एक-एक मंज़िल में पन्द्रह
कोठरियाँ बनायी गयीं। 4 तीनों मंज़िलों में
कड़ियाँ रखी गयीं और तीनों ही में खिड़कियाँ
आमने-सामने थीं। 5 सभी किवाड़ों और
बाजुओं की कड़ियाँ चौकोर थीं। तीनों

[a] 6.37 मन्दिर [b] 6.38 भवन

मंज़िलों में खिड़कियाँ आमने-सामने थीं।
6 एक खम्भे वाला बरामदा बनाया गया।
उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस
हाथ की थी। इन खम्भों के सामने एक खम्भे
वाला ओसारा और सामने डेवढ़ी बनवायी।
7 इन्साफ़ करने के तख्त के लिए ओसारा
बनाया गया। एक फर्श से दूसरी फर्श तक
देवदार के तख्ते थे। 8 सुलैमान के रहने का
भवन उस ओसारे के अन्दर के एक और
आँगन में बना। वह भी उसी तरीके से बना
था। उसी ओसारे की तरह सुलैमान ने अपनी
पत्नी और फ़िरौन की बेटी के लिए जिस
से उसने विवाह किया था, एक और भवन
बनवाया 9 ये सभी घर बाहर-भीतर नींव से
मुंडेर तक ऐसे कीमती और गढ़े हुए पत्थरों से
बने, जो नापकर और आरों से चीर कर तैयार
किए गए थे। ये बाहर के आँगन से लेकर
बड़े आँगन तक लगाए गए थे। 10 उसकी
नींव कीमती और बड़े-बड़े।[a] पत्थरों से डाली
गयी थी। 11 ऊपर भी नाप से गढ़े हुए कीमती
पत्थर थे। वहाँ देवदार की लकड़ी भी थी।
12 बड़े आँगन के चारों ओर के घेरे में गढ़े हुए
पत्थरों के तीन रद्दे और देवदार की कड़ियों
की एक परत थी। यह ठीक वैसा ही था जैसा
कि प्रभु के मन्दिर के अन्दर वाले आँगन और
मन्दिर के ओसारे में लगे थे। 13 राजा सुलैमान
ने सोर से हीराम को बुलवाया। हीराम नप्ताली
कबीले की एक विधवा का बेटा था। उस
का पिता सोरावासी ठठेरा था। 14 वह पीतल
की हर तरह की कारीगरी में पूरी समझ और
योग्यता रखता था। वह राजा सुलैमान का
सब काम करने लगा। 15 पीतल ढाल कर
उसने अठ्ठारह हाथ ऊँचे दो खम्भे बनाए।
एक-एक का घेरा बारह हाथ के सूत का
था। 16 खम्भों के सिरों पर लगाने के लिए
पीतल ढाल कर दो कंगनी बनायी। प्रत्येक
कंगनी की ऊँचाई पाँच हाथ की थी 17 खम्भों
के सिरों पर की कंगनियों के लिए चारखाने
की सात-सात जालियाँ और साँकलों की
सात-सात झालरें बनायी गयी। 18 खम्भों को
इस तरह बनाया कि खम्भों के सिरों पर की
एक-एक कंगनी को ढाँकने के चारों तरफ़
जालियाँ की एक-एक लाईन पर अनारों की
दो लाईनें हों। 19 जो कंगनियाँ ओसारों में
खम्भों के सिरों पर बनीं, उसमें चार-चार हाथ
ऊँचे सोसन के फूल बने हुए थे। 20 एक-एक
खम्भे के सिरे पर, उस गोलाई के पास जो
जाली से लगी हुयी थी, एक और कंगनी बनी
थी। एक-एक कंगनी पर जो अनार चारों ओर
लाईन लगा कर बने थे, उनकी संख्या दो
सौ थी। 21 उन खम्भों को मन्दिर के ओसारे
के पास खड़ा किया गया। दाहिनी ओर के
खम्भे को खड़ा करने के बाद उस का नाम
याकीन रखा गया। बायीं तरफ़ के खम्भे को
खड़ा करके उस का नाम बोअज़ रखा गया।
22 खम्भों के सिरों पर सोसन के पूल का काम
था। इस तरह से खम्भों का काम खत्म हुआ।
23 फिर ढाली हुयी एक बड़ी हौज़ बनायी
गयी। यह एक छोर से दूसरी छोर तक दस
हाथ चौड़ी थी। इसका आकार गोल था और
ऊँचाई पाँच हाथ की थी। इसके चारों ओर
का घेरा तीस हाथ के बराबर था। 24 उसके
चारों ओर के किनारे के नीचे एक-एक हाथ
में, दस-दस कलियाँ बनीं। ये हौज़ को घेरे हुए
थी। जब उसे ढाला गया था, तभी ये कलियाँ
भी दो कतारों में ढाली गयीं 25 वह बारह बने
हुए बैलों पर रखा गया, जिन में से तीन उत्तर,
तीन पश्चिम, तीन दक्षिण और तीन पूर्व की
ओर मुँह किए हुए थे। उन ही के ऊपर हौज़
था और उन सभी का पिछला हिस्सा अन्दर

[a] **7.10** दस और आठ हाथ के

की ओर था। 26 उसने मोटाई मुट्ठी भर और
किनारा कटोरे के किनारे की तरह सोसन के
फूलों सा बना था। इस हौज़ में लगभग 44
हज़ार लीटर पानी आता था 27 पीतल के दस
ठेले बनाए गए। एक ठेले की लम्बाई चार
हाथ, चार हाथ, चौड़ाई चार हाथ और ऊँचाई
तीन हाथ की थी। 28 ठेलों की पटरियाँ थीं
और पटरियों के मध्य में जोड़ भी थे। 29 उन
जोड़ों के बिल्कुल बीच की पटरियों पर शेर,
बैल और करूब बने हुए थे। जोड़ों के ऊपर
भी एक-एक और ठेला बनाया गया। शेरों
और बेलों के नीचे लटकती हुयी झालरें थीं।
30 एक-एक ठेले के लिए पीतल के चार पहिए
और पीतल की धुरियाँ बनी। 31 उस हौज़ का
मुँह जो ठेले की कंगनी के अन्दर और ऊपर
था, उसकी ऊँचाई एक हाथ की थी। ठेले
के मुँह की चौड़ाई डेढ़ हाथ की थी। वह
पाये की तरह ही गोल बनायी गयी। उसके
मुँह पर खुदाई का काम था और उनकी
पटरियाँ चौकोर थी। 32 चारों पहिए पटरियों
के नीचे थे और एक-एक ठेले के पहियों में
धुरियाँ भी थीं। एक-एक पहिये की ऊँचाई
डेढ़ हाथ की थी। 33 रथ के पहिए के समान
पहियों को बनाया गया था। उनकी धुरियाँ,
चक्र, और पाये सभी ढाल कर बनायी गयी
थीं। 34 एक-एक ठेले के चारों कोनों पर चार
आधार थे। आधार और ठेले दोनों एक ही
टुकड़े के बने थे। 35 हर एक ठेले के शिखर
पर आधा हाथ ऊँची चारों तरफ़ गोलाई थी।
ठेले के सिरे पर की टेकें और पटरियाँ ठेले से
जुड़े हुए एक ही टुकड़े के बने थे। 36 टेकों के
पाटों और पटरियों पर जितना स्थान जिस पर
था, उसमें उसने करूब, सिंह और खजूर के
पेड़ खोद कर भर दिए और चारों तरफ़ झालरें
भी बनवायी। 37 इस प्रकार उसने दसों ठेलो
को बनाया। सभी का एक ही साँचा, एक ही
नाप और एक ही आकार था 38 पीतल के
दस कुण्ड बनवाए। एक कुण्ड में लगभग
चालीस हज़ार लीटर पानी आ सकता था।
हर एक कुण्ड चार-चार हाथ चौड़ा था। दस
ठेलों में से एक-एक पर एक कुण्ड था।
39 उसने पाँच कुण्ड भवन के दक्षिण में और
पाँच उत्तर में रख दीं, हौज़ को भवन की
दाहिनी ओर अर्थात् दक्षिण-पूर्व की ओर
रख दिया। 40 हीराम ने हंडों, फावड़ियों और
कटोरों को भी बनवाया। इस तरह हीराम
ने राजा सुलैमान के लिए प्रभु के मन्दिर में
जो भी किया जाना था, पूरा किया। 41 दो
खम्भे और उन कंगनियों की गोलाइयाँ जो
दोनों खम्भों के सिरों पर थीं और दोनों खम्भों
के शिखर पर की गोलाईयों को ढाँकने के
लिए दो-दो जालियाँ) 42 और दोनों जालियों
के लिए चार-चार सौ अनार खम्भों के ऊपर
जो गोलाईयाँ थीं, उनको ढाँकने के लिए
अर्थात् एक-एक जाली के लिए अनारों की
दो-दो लाईनें 43 दस ठेले और इन के ऊपर
के दस कुण्ड 44 एक हौज़ और उसके नीचे
के बारह बैल, हंडे, फावड़ियाँ और कटोरे
बनाए गए। 45 ये सभी बर्तन जिन्हें हीराम ने
प्रभु के मन्दिर और सुलैमान के लिए बनाया,
वह झलकाए हुए पीतल के थे। 46 राजा ने
उनको यरदन की घाटी में अर्थात् सुक्कोत और
सारतान के बीच की चिकनी मिट्टी वाली
ज़मीन में ढाला। 47 सुलैमान ने बहुत ज़्यादा
होने की वजह से सब बर्तनों को बिना तौले
छोड़ दिया। इसलिए पीतल के तौल का
वज़न जाना नहीं जा सका। 48 प्रभु के मन्दिर
के जितने बर्तन थे वे सुलैमान ने बनाए थे।
सोने की वेदी और भेंट की रोटी रखी जाने
वाली सोने की मेंज़ भी इस में शामिल थी।
49 शुद्ध सोने की दीवटें जो अन्दरूनी कोठरी
के आगे पाँच दक्षिण की ओर, पाँच उत्तर

की ओर रखी गयीं और सोने के फूल 50 दिये
और चिमटे, शुद्ध सोने के तसले, कैंचियाँ,
कटोरे, धूपदान, करछे भीतर वाला भवन
जो परमपवित्र स्थान कहलाता है और भवन
जो मन्दिर कहलाता है, दोनों के दरवाज़ों के
लिए सोने के कब्ज़े बनाए 51 इस तरह जो जो
काम राजा सुलैमान ने प्रभु के भवन के लिए
किया, वह सभी पूरा हुआ तब सुलैमान ने
अपने पिता दाऊद के पवित्र किए[a] हुए सोने
चाँदी और बर्तनों को अन्दर पहुँचा कर प्रभु
के भवन के भण्डारों में रख दिया।

8 सुलैमान ने इस्राएली बुज़ुर्गों और
कबीलों के सभी खास आदमियों को
भी जो इस्राएलियों के पूर्वजों के मुखिया
थे, यरूशलेम में अपने पास इस कारणवश
बुलवाया, ताकि वे प्रभु के सन्दूक को
दाऊदपुर से ऊपर ले आएँ। 2 इसलिए
एतानीम या सातवें महीने के त्यौहार के समय
सब इस्राएली पुरुष राजा सुलैमान के पास
इकट्ठे हुए। 3 जैसे ही सभी इस्राएली बुज़ुर्ग
आ गए, तभी पुरोहितों ने सन्दूक का उठा
लिया। 4 इसके बाद पुरोहित और लेवी लोग
प्रभु के सन्दूक, मिलाप वाले तम्बू और दूसरे
अलग किए बर्तनों को ऊपर ले गए। 5 राजा
सुलैमान और पूरी इस्राएली मण्डली वहाँ
पर सन्दूक के सामने तमाम भेड़-बैल कुर्बान
कर रहे थे, जिस को गिनना कठिन था।
6 तब पुरोहितों ने प्रभु की वाचा के सन्दूक
को उसकी जगह[b] में जो परमपवित्र जगह
है, पहुँचाया और करूबों के पँखों के नीचे
रख दिया। 7 करूब सन्दूक की जगह के
ऊपर पंख फैलाए थे, कि वे ऊपर से सन्दूक
और उसके डंडों को ढाके हुए थे। 8 डंडों
की लम्बाई इतनी थी कि उनके सिरे पवित्र
स्थान के सामने के क्षेत्र से दिखायी पड़ते
थे, लेकिन बाहर से वे दिखायी नहीं पड़ते
थे। 9 उन दो तख्तियों को छोड़ जो मूसा ने
होरेब में उसके अन्दर उस समय रखीं थीं,
जब प्रभु ने इस्राएलियों के मिस्र से निकलते
समय उनके साथ वाचा बाँध थी, उसमें और
कुछ नहीं था। 10 जब पुरोहित पवित्रस्थान से
बाहर आए, तब प्रभु के मन्दिर में बादल भर
गया। 11 बादल की वजह से पुरोहित अपनी
सेवा देने के लिए खड़े न रह सके, क्योंकि
प्रभु का तेज मन्दिर में भर गया था। 12 तब
सुलैमान बोला, “प्रभु ने कहा भी था, कि वह
घने अन्धेरे में रहेंगे। 13 मैंने आपके लिए एक
रहने की इतनी मज़बूत जगह बनायी है, जिस
में आप हमेशा रह सकते हैं। 14 तब राजा ने
इस्राएल की पूरी मण्डली की तरफ़ अपना
चेहरा करके आशीर्वाद दिया और सभी लोग
खड़े रहे। 15 वह बोल उठा, “इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर की बड़ाई हो, जिन्होंने मेरे पिता
दाऊद से यह वायदा किया था और स्वयं उसे
पूरा भी कर दिया है। 16 वायदा यह था, ‘जिस
दिन से मैं अपनी प्रजा को मिस्र की गुलामी से
निकाल लाया, तभी से मैंने किसी इस्राएली
गोत्र का कोई नगर नहीं चुना कि वह मेरी
प्रजा इस्राएल का अधिकारी हो। 17 मेरे पिता
दाऊद की यह कामना थी कि इस्राएल के प्रभु
परमेश्वर के नाम का एक एक भवन बनाया
जाए। 18 लेकिन प्रभु ने मेरे पिता दाऊद से
कहा था कि उसकी मनसा तो अच्छी थी कि
एक एक मन्दिर बनाए। 19 यह भी कि उस का
बेटा[c] ही बना पाएगा, वह नहीं।” 20 अपनी
इस प्रतिज्ञा को प्रभु ने पूरा भी किया है और
मैं अपने पिता दाऊद की जगह पर विराजमान
हूँ। इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के नाम से इस
भवन को बनाया गया है। 21 इसमें एक जगह

[a] **7.51** अलग किए [b] **8.6** पवित्रस्थान [c] **8.19** मैं

मैंने उस सन्दूक के लिए ठहरायी है, जिस
में प्रभु की वह वाचा है, जो हमारे पूर्वजों
से उनके मिस्र से निकलते समय बान्धी थी
22 फिर इस्राएल की पूरी सभा के सामने प्रभु
की वेदी के सामने खड़े होकर अपने हाथों
को ऊपर फैलाकर कहा, 23 “हे प्रभु, इस्राएल
के प्रभु न स्वर्ग में ऊपर और न नीचे पृथ्वी
पर आप जैसा कोई प्रभु है। आपके जो दास
अपने पूरे मन से खुद को आपके सामने
रखते हुए जीते हैं उनके लिए आप अपनी
प्रतिज्ञा को पूरी करते हैं, और दया करते रहते
हैं। 24 जो शब्द आपने मेरे पिता से कहे थे,
उन्हें आपने पूरा किया है। 25 इसलिए अब
हे इस्राएल के प्रभु परमेश्वर, इस वचन को
भी पूरा कीजिए, जो आपने अपने दास मेरे
पिता दाऊद को दिया था, “तुम्हारे वंश में मेरे
सामने इस्राएली गद्दी पर विराजने वाले हमेशा
बने रहेंगे। बस इतना हो कि जैसे तुम मेरी
इच्छा पर चलते रहे हो, वैसे ही तुम्हारे वश
के लोग अपने चाल-चलन का ध्यान रखें।
26 इसलिए अब हे इस्राएल के प्रभु अपनी वह
बात जो आपने अपने दास मेरे पिता दाऊद से
कही थी, उसे सही सिद्ध कर दीजिए। 27 क्या
प्रभु सचमुच इस पृथ्वी पर रहेंगे? स्वर्ग में
ही सब से ऊँचे स्वर्ग में भी आप समा नहीं
पाते, फिर मेरे बनवाए इस मन्दिर में कैसे
समाएँगे? 28 फिर भी हे मेरे प्रभु परमेश्वर!
अपने दास की बिनती और गिड़गिड़ाहट
की ओर ध्यान दें। मेरी दोहाई को सुनें।
29 आपकी दृष्टि इस मन्दिर की तरफ़ जिस के
बारे में आपने कहा था कि आपकी आँखें इस
पर लगी रहेंगी, लगी रहें। जो बिनती आपका
दास इस जगह की ओर करे, उसे आप सुन
लीजिएगा। 30 इस स्थान पर आपकी प्रजा
इस्राएल और आपके दास की प्रार्थना जो
गिड़गिड़ाकर की जाएगी, उसे आप सुनना
और सुन कर माफ़ करना 31 जब कोई किसी
के विरोध में अपराध करे और उसको शपथ
खिलायी जाए और वह यह मन्दिर की वेदी
के सामने प्रण करे, 32 तब आप स्वर्ग से
सुन अर्थात् अपने दासों का इन्साफ़ करके
बुरा करने वाले को सज़ा देकर, बेगुनाह को
निर्दोष साबित कर उसके काम के अनुसार
उसको भी प्रतिफल देना। 33 आपके लोग
जब आपके विरोध में बलवा करने के कारण
दुश्मनों से हार जाएँ और आपकी तरफ़
मुड़ कर आपका नाम लेते हुए इसे मन्दिर
में आपके सामने गिड़गिड़ाएँ, 34 तब स्वर्ग
से सुन कर अपनी प्रजा का अपराध माफ़
करना। उन्हें इस ज़मीन पर वापस लौटा ले
आना, जिस की प्रतिज्ञा आपने उनके पूर्वजों
से की थी 35 “जब वे आपके खिलाफ़ दुष्टता
करें और परिणामस्वरूप बारिश न हो, ऐसे
समय में यदि वे इस जगह की ओर प्रार्थना
करके आपके नाम को माने, जब कि आपके
दण्ड को वे भुगत रहे हों। साथ ही अपनी
बुराई से मुड़ जाएँ तो आप स्वर्ग से सुन कर
क्षमा कर देना। 36 अपने दासों और अपनी
प्रजा का अपराध क्षमा करना, जिसे रास्ते पर
उन्हें, चलना चाहिए वह भला रास्ता आप
उन्हें दिखाते हैं। इसलिए इस भूमि को जो
आपने अपने लोगों को दे दी है, यहाँ वर्षा
भेज देना। 37 जब कभी इस देश में आकाल,
मरी, झुलस, गेरूई, टिड्डी, कीड़ों, विपत्तियों,
रोगों और दुश्मनों से खतरा हो 38 तब अगर
कोई जन या आपके लोग अपने-अपने मन
का दुख जान कर रो-रो कर, हाथ फैलाकर
निवेदन करें, 39 तब आप ऊपर से सुन कर
माफ़ करना, उनके मन और चाल को देख
कर प्रतिफल देना। आप ही सब लोगों के
मन को जानते हैं। 40 तब उनके बुज़ुर्गों को
दिए हुए इस देश में वे आपस डरते हुए

जिएँ। 41 परदेशी, जो दूर देश से आए हों और
इस्राएली न हों, 42 जिस ने आपके किए गए
कार्य के बारे में सुना हो और वह इस मन्दिर
की ओर प्रार्थना करे, 43 तब आप अपने
स्वर्गिक निवास से सुन कर उस परदेशी की
मनोकामना को पूरा करना। इस से होगा यह
कि दुनिया के दूसरे लोग आपको जान कर
आपकी प्रजा इस्राएल से डरेंगे। इस में कोई
सन्देह नहीं कि यह मेरा बनाया हुआ भवन
आपका ही कहलाता है। 44 यदि आपके लोग
अपने दुश्मनों से युद्ध करते समय कहीं दूर
निकल जाएँ, और वहीं से इस भवन की
दिशा की ओर अपना मुँह करके कुछ माँगें,
45 तब स्वर्ग से उनके गिड़गिड़ाने को सुन कर
उनका न्याय कीजिएगा। 46 "कोई ऐसा नहीं
जो निर्दोष हो, यदि ये लोग आपके खिलाफ़
गलत करें और गुस्से में आकर आप उन्हें
उनके शत्रुओं के कब्ज़े में कर दें और उन्हें
गुलाम बना कर कितनी ही दूर वे क्यों न
ले जाएँ। 47 वहाँ गुलामी के देश में यदि वे
सोच-विचार करें और पश्चात्ताप करके अपनी
दृष्टि आपकी तरफ़ करें और माने, "हम ने
बुरा किया है, अपराध किया है, दुष्टता की है
48 यदि वे अपने दुश्मनों के देश में जहाँ बन्दी
हों, पूरे मन और प्राण से आपकी ओर फिरें
और आपके द्वारा दी गयी भूमि और भवन
की ओर, जिसे मैंने आपके नाम से बनाया है,
आप से प्रार्थना करें, 49 तब आप स्वर्गिक
स्थान से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट
को सुन कर उनका न्याय कीजिएगा। 50 जो
गुनाह आपके लोग आपके विरुद्ध करें उन्हें
क्षमा करके उन्हें दासत्व में ले जाने वाले
लोगों के मन में तरस पैदा करना, ताकि वे
उन पर कृपा करें। 51 क्योंकि वे तो आपकी
प्रजा और आपके अपने लोग हैं, जिन्हें आप
लोहे के भट्टी के बीच में से अर्थात् मिस्र से
निकाल लाए हैं। 52 इसलिए आपकी आँखें
आपके दास की गिड़गिड़ाहट और आपकी
प्रजा इस्राएल की दोहाई की ओर ऐसी खुली
रहें कि जब वे आपको पुकारें, तब उन्हें
उत्तर दें। 53 क्योंकि हमारे पूर्वजों के मिस्र से
निकलते समय अपने सेवक मूसा से कहा
था कि पृथ्वी के सभी राष्ट्रों से इन्हें अलग
किया है ताकि वे आपके अपने लोग ठहरें।"
54 जब सुलैमान ने घुटने टेककर आकाश
की ओर हाथ फैलाकर प्रभु से यह प्रार्थना
गिड़गिड़ाहट के साथ करी। बाद में वह वेदी
के सामने से उठ खड़ा हुआ। 55 ऊँचे स्वर
से उसने इस्राएली लोगों को आशीर्वाद देने
के बाद कहा, 56 "प्रभु परमेश्वर आपका
शुक्रिया जिन्होंने अपने कहने के अनुसार
अपनी प्रजा को आराम दिया है। सारी भलाई
की वे बातें, जिन्हें मूसा के द्वारा प्रभु ने
पहुँचायी थीं, वे सभी पूरी हो गयी हैं। 57 जिस
तरह से प्रभु परमेश्वर हमारे पूर्वजों के साथ
रहे, वैसे ही हमारे संग भी रहें। वह न हमें
छोड़ें और न ही त्यागें। 58 हमारे मनों को वह
अपनी ओर इस तरह से रखें कि हम सभी
उनके रास्तों पर चलते रहें। साथ ही हम सभी
प्रभु की आज्ञाओं, नियमों और विधियों का
पालन करें। 59 जो बातें मैंने प्रभु के सामने
रखी हैं, वे दिन और रात हमारे प्रभु परमेश्वर
के मन में स्थिर रहें। हर रोज़ की ज़रूरत के
मुताबिक वह अपने दास और अपनी प्रजा
इस्राएल का न्याय करें। 60 सारी दुनिया के
लोग तब जान पाएँगे कि प्रभु ही प्रभु हैं और
कोई दूसरा नहीं। 61 तुम्हारा मन हमारे प्रभु
परमेश्वर की तरफ़ पूरी तरह से लगा रहे,
ताकि आज तक की तरह उसके रास्तों पर
चलते रहो। 62 तब राजा और प्रजा दोनों ही
मेलबलि चढ़ाने लगे। 63 जो जानवर सुलैमान
ने मेलबलि के रूप में प्रभु के लिए चढ़ाए

थे, वे बाईस हज़ार बैल और एक लाख
बीस हज़ार भेड़ें थीं। इस तरह राजा ने सभी
इस्राएलियों के साथ मिल कर प्रभु के भवन
को आदर सम्मान दिया। 64 उसी दिन राजा ने
प्रभु के भवन के सामने वाले आँगन के बीच
भी एक जगह पवित्र की[a]। वहीं होमबलि,
मेलबलि की चर्बी और अन्नबलि को चढ़ाया
गया। इसलिए प्रभु के सामने की पीतल की
वेदी छोटी थी। 65 इसलिए सुलैमान और
उसके संग पूरे इस्राएल की एक बड़ी सभा
हमात की घाटी से लेकर मिस्र के नाले तक
के सभी राष्ट्रों से इकट्ठी हुयी थी। इन सभी
ने दो हफ्ते या चौदह दिन तक प्रभु के लिए
त्यौहार मनाया, आठवें दिन उसने प्रजा के
लोगों को जाने दिया, 66 वे राजा की बड़ाई
करते हुए उस सब भलाई के कारण जो प्रभु ने
अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा इस्राएल
से की थी, खुशी मनाते हुए अपने-अपने तम्बू
के तरफ़ चल दिए।

9 जब सुलैमान ने प्रभु के भवन और
राजमहल का बनाने सारा काम खत्म
किया, 2 तब बिल्कुल गिबोन के दर्शन की
तरह दूसरी बार उसे दर्शन मिला। 3 प्रभु ने
कहा, “जो बिनती निवेदन मेरे सामने तुमने
रोते हुए रखे हैं, उन्हें मैंने सुन लिया है। इस
भवन में मैंने अपने नाम को सदा के लिए
रखकर, अलग किया है। मेरी आँखें और
मेरा मन हर दिन वहीं लगे रहेंगे। 4 यदि तुम
अपने पिता की तरह मन की सच्चाई और
सिधाई से अपने को मेरे सामने जान कर
जीवन जिओगे मेरी आज्ञाओं को मानोगे, मेरी
विधियों-नियमों को मानते रहोगे, तो मैं तुम्हारे
शासन को इस्राएल के ऊपर हमेशा के लिए
बना कर रखूँगा। 5 तुम्हारे पिता दाऊद को
मेरी दी गयी प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारे वंश
में इस्राएल की गद्दी पर बैठने वाले सदा बने
रहेंगे। 6 लेकिन यदि तुम लोग या तुम्हारे वंश
के लोग मेरे अनुसार जीना छोड़ दें। यदि
वे दी गयी आज्ञाओं को न मानें और पराए
देवताओं की उपासना करने लगें, 7 तो मैं
इस्राएल को इस देश में सो जो मैंने उन्हें
दिया है, काट डालूँगा। इसके साथ ही मैं
इस भवन को जो मैंने अपनी आराधना के
लिए अलग किया है, अपनी निगाह से उतार
दूँगा। तब सब देशों के लोगों में इस्राएल की
बदनामी होगी। 8 इसके पास से जाने वाले
लोग अचम्भा करेंगे, हँसेंगे और पूछेंगे, “प्रभु
ने इस राष्ट्र के साथ ऐसा क्यों किया?”
9 तब लोग जवाब देंगे, “इन लोगों ने अपने
उस प्रभु परमेश्वर को जो उन्हें मिस्र की
गुलामी से निकाल लाए थे, छोड़कर पराए
देवताओं को अपना लिया। उनके सामने सिर
झुकाए और इबादत की। इसलिए प्रभु ने यह
मुसीबत उन पर उण्डेल दी है।” 10 बीस साल
में सुलैमान मन्दिर और राजमहल को बना
सका था। 11 तब सुलैमान ने सोर के राजा
हीराम को जिस ने मन्दिर के बनाए जाने के
लिए देवदार और सनौवर की लकड़ी और
सोना दिया था, गलील क्षेत्र के बीस नगर
दिए। 12 सुलैमान द्वारा दिए गए ये नगर हीराम
को पसन्द नहीं आए। 13 तब वह बोला, “हे
मेरे भाई, ये कैसे नगर तुमने मुझे दिए हैं? ये
तो कुछ कीमत नहीं रखते। इसलिए उनका
नाम कबूल[b] पड़ा रहा। 14 फिर हीराम ने राजा
के यहाँ एक सौ बीस किक्कार सोना भेजा।
15 बेगारी में लोगों को रखने के पीछे सुलैमान
का मकसद था, कि अपना भवन बनाने के
साथ मिल्लो और यरूशलेम की शहरपनाह,
हासोर, मगिद्दो और गेज़ेर नगरों को मज़बूत

[a] **8.64** अलग की [b] **9.13** नहीं के बराबर

करे। 16 मिस्र के राजा ने गेजेर पर हमला
करके हथिया लिया था। उसने रहने वाले
कनानियों को मार डाला और आग लगा कर
शहर को बर्बाद कर डाला। उसे अपनी बेटी
सुलैमान की रानी का हिस्सा करके दे दिया
था। 17 इसलिए सुलैमान ने गेजेर और नीचे
वाले बथोरेन, 18 बालात और तामार को जो
जंगल में है, मज़बूत किया 19 सुलैमान के
भण्डार वाले नगर, रथों और सवारों के नगर,
यरूशलेम, लबानोन आदि जिन-जिन जगहों
को उसने चाहा मज़बूती प्रदान की। 20 एमोरी,
हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और बचे हुए यबूसी
जो इस्राएलियों में के न थे, 21 उनके वंश
जो उनके पश्चात् देश में शेष रह गए थे और
जिन्हें इस्राएली बर्बाद न कर पाए थे, उनको
सुलैमान ने गुलाम करके बेगारी में रखा था।
22 लेकिन इस्राएलियों में से सुलैमान ने किसी
को गुलाम नहीं बनाया। वे सैनिक और उसके
कर्मचारी, उसके हाकिम, उसके सरदार,
उसके रथों और सवारों के प्रधान हुए।
23 काम करने वालों के ऊपर देख-रेख करने
वाले मुख्य गर्वनरों की संख्या पाँच सौ पचास
थी। 24 जब फ़िरौन की बेटी के दाऊदपुर
से उस महल को आयी, जो उसके लिए
बनाया गया था, तब उसने मिल्लो को बनाया।
25 प्रभु के लिए हर साल तीन बार वेदी
के सामने सुलैमान, होमबलि और मेलबलि
चढ़ाता और धूप जलाता था। 26 सुलैमान ने
लाल समुद्र के एदोम देश के एस्योन गेबेर
के किनारे एलोत के पास जहाज़ बनाए।
27 सुलैमान के कर्मचारियों के साथ हीराम ने
अपनी निपुण महिलाओं को भी भेज दिया।
28 उन्होंने लगभग सोलह टन सोना ओपोर
से लाकर सुलैमान को दिया।

10 सुलैमान की बड़ाई सुन कर,
मुश्किल सवालों से उसकी परीक्षा
करने शीबा की रानी आयी। 2 एक बड़े दल,
मसालों, सोने, मणि से लदे ऊँट के साथ वह
यरूशलेम आयी। आने के बाद वह सुलैमान
से मन की बातों के बारे में सवाल करने लगी।
3 सुलैमान ने उसके सभी सवालों का जवाब
दे दिया। 4 शीबा ने उस का भोजन, और
बनवाया हुआ भवन देखा और उसकी बुद्धि
को भी समझा। 5 उसके कर्मचारियों और
सेवा करने वालों का उठना-बैठना देखा।
उसने प्रभु के भवन को जाने वाले मार्ग को
भी देखा। यह सभी देख कर वह आश्चर्य से
भर गयी। 6 तब वह राजा से बोली, “तुम्हारे
कामों और बुद्धिमानी की जो बड़ाई जो
मैंने अपने कानों से सुनी थी, वह सब सच
है। 7 जो कुछ मैंने सुना था वह उन सभी
बातों को जिन्हें देख रही हूँ, आधा ही था।
तुम्हारी बुद्धिमानी और बड़प्पन उन बातों से
बढ़ कर है जो मैंने सुना था। 8 तुम्हारे लोग
धन्य हैं, तुम्हारे सेवक धन्य हैं, जो हर दिन
तुम्हारे सामने रह कर तुम्हारी ज्ञान की बातें
सुना करते हैं। 9 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की
बड़ाई हो, जो तुम से इतना खुश हुए कि
तुम्हें इस्राएल के राजासन पर बैठा दिया।
प्रभु इस्राएल से हमेशा प्रेम रखते हैं। इस
कारणवश तुम्हें न्याय और खराई से काम
करने के लिए राजा बनाया है। 10 शीबा रानी
ने सुलैमान राजा को साढ़े चार टन सोना,
इत्र और मणि दिया। जितना इत्र रानी ने
सुलैमान को दिया उतना फिर कभी नहीं
मिला। 11 फिर हीराम के जहाज़ जो ओपीर
से सोना लाया करते थे, ढेर सारी चन्दन
की लकड़ी और मणि लाए। 12 राजा ने इस

चन्दन की लकड़ी से प्रभु के भवन और
राजमहल के खम्भे और गाने वालों के लिए
वीणा तथा सारंगियाँ बनवायी। यह चन्दन
की लकड़ी सर्वोत्तम थी। 13 सुलैमान ने शीबा
की मनचाही चीजों को दिया साथ ही अपने
मन से दिल खोलकर सुलैमान ने रानी को
भेंट दी। इसके बाद वह अपने लोगों के
साथ अपने देश वापस चली गयी। 14 हर
साल जो सोना, सुलैमान तक पहुँचता था,
उसकी तौल लगभग पच्चीस टन हुआ करती
थी। 15 इसे छोड़ सौदागरों, व्यापारियों के
लेन-देन से अरब देश के राजाओं और गवर्नरों
से भी खूब सोना मिला करता था। 16 राजा ने
सोने की बड़ी-बड़ी सौ ढालें बनवायीं। एक
ढाल में साढ़े तीन किलोग्राम सोना उपयोग
किया गया था। 17 तीन सौ छोटी ढालें भी
बनवायीं, प्रत्येक ढाल में तीन माने सोना
इस्तेमाल किया गया था। उन्हें लबानोनी वन
नामक भवन में रखाया गया। 18 हाथी दाँत
का राजासन बनवा कर बढ़िया कुन्दन से
मढ़वा दिया। 19 इस राजासन में छैः सीढ़ियाँ
थीं। इसका पिछला हिस्सा गोलाकार था।
इस में बैठने की जगह के दोनों ओर टेक
भी लगी थी। दोनों टेकों के पास एक-एक
शेर खड़ा हुआ बनवाया। 20 छहों सीढ़ियों
की दोनों तरफ़ एक-एक शेर खड़ा हुआ था।
सब मिला कर बारह शेर थे। 21 राजा सुलैमान
के यहाँ पीने के सभी बर्तन सोने के बने थे।
लबानोनी वन नामक भवन के सभी बर्तन भी
शुद्ध सोने के थे। चाँदी का कोई भी बर्तन नहीं
था। लेकिन सुलैमान के समय में उसके बारे
में कोई लेखा-जोखा नहीं था। 22 समुद्र पर
हीराम के जहाज़ों के साथ राजा भी तर्शीश के
जहाज़ रखता था। तीन-तीन साल पर तर्शीश
के जहाज़ सोना, चाँदी, हाथी दाँत, बन्दर
और मयूर लाते थे 23 इस तरह सुलैमान राजा
दौलत और अक्ल में दुनिया के सभी राजाओं
से बढ़ गया। 24 सारे संसार के लोग उसकी
बुद्धि की बातें सुनते ही उस से मिलना चाहते
थे। 25 हर साल वे अपने ईनाम अर्थात् चाँदी
और सोने के बर्तन, कपड़े, इत्र, घोड़े और
खच्चर लाते थे। 26 सुलैमान के पास चौदह
सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे। उसने
उन्हें रथों के नगरों में और यरूशलेम में राजा
के पास ठहराया। 27 समृद्धि के कारण राजा
ने यरूशलेम में चाँदी को पत्थर की तरह
और देवदार को गूलर की तरह कर दिया।
28 सुलैमान के घोड़े मिस्र से लाए गए थे। राजा
के व्यापारी लोग झुण्ड-झुण्ड करके ठहराए
हुए दान लिया करते थे। 29 एक रथ सात
किलोग्राम चाँदी में और एक घोड़ा किलोग्राम
चाँदी में मिस्र से मंगाया जाता था।

11 राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी और
तमाम दूसरे देशों जैसे मोआबी,
अम्मोनी, एदामी, सिदोनी और हित्ती
महिलाओं को पसन्द करने लगा। 2 ये
महिलाएँ ऐसी पृष्ठभूमि से थीं, जिन से प्रभु
ने सम्बन्ध जोड़ने के लिए इसलिए मना
किया था, ताकि वे सुलैमान का मन दूसरे
देवताओं की ओर न मोड़ लें। लेकिन ऐसी
ही महिलाओं से लगाव हो गया। 3 उसके
सात सौ रानियाँ और तीन सौ रखेलियाँ
हो गयी। इन स्त्रियों ने उस का मन बहका
दिया। 4 सुलैमान के बुढ़ापे में इन स्त्रियों
ने उस का मन देवताओं की तरफ़ कर
दिया। उस का दिल उसके पिता दाऊद की
तरह उसके प्रभु परमेश्वर पर पूरी तरह
नहीं टिका रहा। 5 सुलैमान सिदोनियों की
अश्तोरेत नामक देवी और अम्मोनियों के
मिल्कोम नामक घिनौने देवता को मानने
लगा। 6 जो प्रभु की निगाह में घिनौनी बात

थी, वही सुलैमान ने की। अपने पिता दाऊद
की तरह उस का मन प्रभु परमेश्वर से मिला
न रहा। 7 सुलैमान ने यरूशलेम के सामने
के पर्वत पर मोआबियों के कमोश नामक
घिनौने देवता के लिए और अम्मोनियों के
मोलेक नामक घिनौने देवता के लिए एक
ऊँचा स्थान बनवाया। 8 दूसरे राष्ट्रों की
अपनी स्त्रियों के लिए भी जो अपने-अपने
देवताओं के लिए धूप जलातीं और बलिदान
करती थीं, उसने ऊँचे स्थान बनवाए। 9 तब
जिस प्रभु परमेश्वर ने उसे दो बार दर्शन
दिया था, उस प्रभु से उस का मन हट जाने
से, इस्राएल के प्रभु का गुस्सा भड़क गया।
10 पराए देवताओं को न मानने की आज्ञा
उसे प्रभु ने पहले ही से दी थी, लेकिन उसने
अनसुनी की। 11 इसलिए प्रभु ने सुलैमान से
कहा, “इसलिए कि मेरे साथ बान्धी गयी
वाचा को तुमने तोड़ दिया है इस कारणवश
मैं तुम्हारे हाथ से शासन छीन कर तुम्हारे
एक कर्मचारी को दे दूँगा। 12 तौभी तुम्हारे
पिता दाऊद के कारण तुम्हारे समय में ऐसा
न करूँगा, लेकिन तुम्हारे बेटे के हाथ से
राज्य छीन लूँगा 13 फिर भी मैं पूरे राज्य
को छीनूँगा नहीं, लेकिन अपने दास दाऊद
के कारण और अपने चुने हुए यरूशलेम
के कारण, मैं तुम्हारे बेटे के हाथ में एक
कबीला छोड़ दूँगा 14 तब प्रभु ने एदोमी
राजवंश हदद को सुलैमान का दुश्मन बना
दिया। 15 दाऊद के एदोम में रहते समय,
योआब सेनापति घात किए हुए लोगों को
दफ़नाने गया। 16 a 17 हदद उस समय उम्र
में छोटा ही था जब वह अपने पिता के
अनेक एदोमी सेवकों के साथ मिस्र जाने के
लिए मांगा था। 18 मिद्यान से गुज़रते हुए वे
परान पहुँचे। परान से तमाम पुरुषों को साथ
लेकर मिस्र में फ़िरौन राजा के पास पहुँचे।
फ़िरौन ने उसके खाने का बन्दोबस्त करने
के साथ घर और ज़मीन भी दी। 19 फ़िरौन
ने हदद पर तरस खाया और अपनी रानी
तहपनेस की बहन से विवाह करा दिया।
20 तहपनेस की बहन के बेटे का नाम
गनूबत रखा गया। इसका दूध तहपनेस ने
फ़िरौन के भवन में ही छुड़ाया था। फ़िरौन
के बेटों के साथ गनूबत रहा करता था।
21 मिस्र में ही रहते हुए जब यह समाचार
मिला कि दाऊद का देहान्त हो गया है और
सेनापति योआब भी न रहा, तब वह फ़िरौन
से बोला, “मुझे मेरे देश जाने की आज्ञा
दीजिए।” 22 फ़िरौन ने पूछा, “क्यों? यहाँ
तुम्हें किस बात की कमी है, कि अपने देश
को जाना चाहते हो?’ उसने उत्तर दिया,
“ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन फिर भी मैं जाना
चाहता हूँ।” 23 फिर प्रभु ने उस का एक
और दुश्मन खड़ा किया। यह था एल्यादा
का बेटा रजोन। वह अपने मालिक सोबा के
राजा हददेज़ेर के पास से भागा था। 24 जब
दाऊद ने सोबा के लोगों को मारा था, तब
रजोन अपने साथ बहुत से आदमियों को
इकट्ठा करके एक झुण्ड का लीडर हो गया
था। वह दमिश्क जाकर, वहीं रहते-रहते
शासन करने लगा। 25 उस नुकसान के साथ
जो हदद ने किया था, रजोन भी सुलैमान
के जीवन काल तक इस्राएल का दुश्मन
बना रहा। वह अराम पर शासन करता रहा,
साथ ही इस्राएल से नफ़रत करता रहा
26 फिर नबात और सरूआह नाम का एक
विधवा का बेटा यारोबाम नामक एक एप्रैमी
सरेदावासी जो सुलैमान का कर्मचारी था,

[a] **11.16** योआब तो सारे इस्राएल सहित वहाँ छैः महीने रहा, जब तक कि उसने एदोम के सब आदमियों को नाश नहीं कर डाला

उसने भी राजा के विरोध में बलवा किया।
27 उसके बलवा करने का कारण यह था
कि सुलैमान मिल्लो का निर्माण कर रहा था
और अपने पिता दाऊद के नगर की दरार
को बन्द कर रहा था। 28 यारोबाम बहुत
ताकतवर था। उसे मेहनती देख कर उसने
पूरे घर पर प्रबन्धक ठहरा दिया। 29 एक
दिन यारोबाम यरूशलेम से निकल कर जा
रहा था, तभी शीलोहवासी नबी अहिय्याह,
नयी चादर ओढ़े उस से मिला। उस समय
केवल यही दोनों मैदान में थे। 30 तब
अहिय्याह ने उस चादर को फाड़ कर बारह
टुकड़े किए। 31 इसके बाद वह यारोबाम
से बोला, “सुनो इस्राएल के प्रभु परमेश्वर
ऐसा कहते हैं, सुलैमान के हाथ से राज्य को
छीन कर तुम्हारे सुपुर्द मैं दस कबीलों को
कर दूँगा। ये लो, इस चादर के दस टुकड़े।
32 लेकिन दाऊद के साथ मेरी वाचा के
कारण जिसे मैंने इस्राएल के सभी कबीलों में
से चुना है, उस का एक कबीला बना रहेगा
33 ऐसा इसलिए होगा क्योंकि इन लोगों
ने मुझे छोड़कर सिदोनियों की अश्तोरेत
देवी, मोआबियों के देवता कमोश और
अम्मोनियों के देवता मिल्कोम की उपासना
की। इन लोगों ने मेरे रास्तों को त्याग दिया
है। जो मेरी निगाह में सही है, इन्होंने नहीं
किया। मेरी विधियों और नियमों का पालन
वैसे नहीं किया, जैसा सुलैमान के पिता
दाऊद ने किया था। 34 फिर भी मैं उसके
हाथ से पूरा का पूरा राज्य नहीं छीनूँगा।
लेकिन इसलिए कि मेरा चुना हुआ दास
दाऊद, जिस ने मेरी आज्ञाओं का मानना
नहीं छोड़ा था, इस कारण मैं उसको जीवन
भर प्रधान बनाए रखूँगा। 35 लेकिन उसके
बेटे के हाथ से मैं पूरे राज्य के दास गोत्र
लेकर तुम्हें दे दूँगा। 36 उसके बेटे को मैं एक
गोत्र दूँगा। ऐसा इसलिए क्योंकि यरूशलेम
जिस नगर को मैंने अपना नाम बनाए रखने
के लिए चुना है, मेरे दास दाऊद का दीया
मेरे सामने हमेशा बना रहे। 37 तुम्हें मैं ठहरा
लूँगा अपनी इच्छा भर तुम इस्राएल पर राज्य
करोगे। 38 यदि तुम मेरे दास दाऊद की तरह
मेरी सारी आज्ञाओं को मानों, मेरे रास्तों
पर चलो, जो काम मेरी दृष्टि में उचित हैं,
वही करो और मेरी विधियों और आज्ञाओं
को मानते रहो, तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।
ठीक जिस तरह से मैंने दाऊद के परिवार
को बना कर रखा है। 39 मैं इस अपराध के
कारण दाऊद के वंश को दुख दूँगा, लेकिन
सदा काल का दुख नहीं।” 40 इन बातों के
कारण सुलैमान ने यारोबाम का कत्ल करना
चाहा, लेकिन यारोबाम भाग कर मिस्र के
राजा शीशक के पास गया और जब तक
सुलैमान का देहान्त न हुआ, वहीं रहा।
41 सुलैमान की दूसरी सभी बातें, काम और
उसकी समझ का बखान, क्या सुलैमान
के इतिहास की किताब में नहीं लिखा है?
42 यरूशलेम से सारे इस्राएल पर सुलैमान ने
चालीस साल शासन किया। 43 इसके बाद
वह मर गया और उसको उसके पिता दाऊद
के नगर में दफ़नाया गया। उसके मरने के
बाद रहूबियाम उसकी जगह राजा बना।

12 सभी इस्राएली रहूबियाम को राजा
बनाने वाले थे, इसलिए वह शेकेम
को चला गया। 2 नबात का बेटा यारोबाम,
सुलैमान के डर से मिस्र में था। लोगों ने उसे
बुलवाया। 3,4 तभी यारोबाम और इस्राएली
लोग रहूबियाम के पास गए और कहा,
“तुम्हारे पिता ने तो हमारे ऊपर भारी बोझ
रखा था। अब तुम अपने पिता की कठोर
सेवा को और उस भारी बोझ को जो उसने

हम पर रखा हुआ है, कुछ कम करो। इसी
शर्त पर हम तुम्हारे अधीन रहेंगे।" 5 वह
बोला, "तुम लोग अभी चले जाओ, तीन दिन
के बाद मेरे पास आना।" तब वे वहाँ से चले
गए। 6 तब राजा रहूबियाम ने उन बुज़ुर्गों से
जो उसके पिता सुलैमान के राज्य के समय
उसे सलाह मशविरा दिया करते थे, उन से
सलाह ली। उन्होंने पूछा, "इन लोगों को कैसे
जवाब देना चाहिए, तुम लोग बताओ?" 7 वे
बोले, "यदि तुम अपनी प्रजा के लोगों के दास
बन कर उनके अधीन रहो, उन से मीठी बातें
करो, तो वे लोग हमेशा तुम्हारे अधिकार का
सम्मान करेंगे।" 8 रहूबियाम ने इस सलाह को
तुच्छ जाना, जो बुज़ुर्ग लोगों ने उसे दी थी।
जो जवान उसके साथ बढ़े थे, उसने उनकी
सलाह मानने का फैसला लिया। 9 उसने उन
से सवाल किया, "मैं इस्राएलियों को उत्तर
कैसे दूँ? तुम्हारा क्या ख्याल है? वे लोग
मुझ से कह रहे हैं, "जो बोझ तुम्हारे पिता
ने हमारे कन्धों पर रख दिया था, उसे हल्का
कर दो।" 10 उसके संगी जवान बोले, "तुम
उन लोगों से यह कहना, 'कि मेरी छंगुली मेरे
पिता की कमर से भी मोटी हैं। मेरे पिता ने जो
बोझ तुम्हारे ऊपर रखा था, उसे मैं बढ़ाऊँगा।
11 मेरा पिता तुम्हें कोड़े लगा-लगा कर सीख
देता था, लेकिन मैं बिच्छुओं से कटा कर
तुम्हें सही करूँगा।" 12 जैसा राजा ने आज्ञा दी
थी वे लोग तीसरे दिन उसके पास आए, वैसा
ही हुआ और रहूबियाम भी वहीं था। 13 तब
प्रजा से राजा ने बहुत कठोरता से बात की।
14 बूढ़ों की सलाह मशविरा को नज़रअंदाज
करते हुए, जवानों की सुन कर उसने कहा,
"मेरे पिता ने तुम पर काफी दबाव रखा
था, लेकिन तुम्हें और ज़्यादा दबाऊँगा। मेरे
पिता ने तुम्हें कोड़ों से मारा था, लेकिन मैं
तुम्हें बिच्छुओं से कटाऊँगा।" 15 इस तरह
राजा ने प्रजा की बात नहीं मानी। इसका
कारण यह था कि जो कुछ प्रभु ने शीलोवासी
अहिय्याह के द्वारा नबात के बेटे यारोबाम से
कहा था, उसको पूरा करने के लिए उसने
ऐसा ही फैसला किया था 16 राजा के नहीं
सुनने पर, इस्राएलियों ने कहा, "दाऊद के
साथ हमारा क्या हिस्सा? यिरै के बेटे में
हमारा कोई हिस्सा नहीं है। तुम सभी लोग
अपने-अपने तम्बू में चले जाओ, अब हमें
खुद ही अपने आपको संभालना पड़ेगा।"
17 इसके बाद इस्राएली अपने-अपने तम्बू में
चले गए। मात्र यहूदा के नगरों में रहने वाले
नगरों में रहूबियाम राज्य करता रहा। 18 तब
बेगारों के अधिकारी अदोराम को रहूबियाम
ने भेजा। इस्राएलियों ने पत्थरों से उसे मार
डाला। इसके बाद रहूबियाम झटपट रथ पर
चढ़ा और यरूशलेम को रवाना हुआ। 19 इस
तरह इस्राएल दाऊद के घराने से मुड़ गया
और आज तक वैसा ही है। 20 यारोबाम के
लौटने की सूचना पाते ही, इस्राएल ने उसे
बुलवाया और पूरे इस्राएल के ऊपर राजा
बना दिया। उसके राज्य में केवल यहूदा
का कबीला था। 21 रहूबियाम के यरूशलेम
आने पर उसने यहूदा के पूरे घराने को और
बिन्यामीन के कबीले को जो एक लाख
अस्सी हज़ार अच्छे सैनिक थे, इकट्ठा किया।
ऐसा इसलिए ताकि वे इस्राएल के घराने के
साथ लड़े और राज्य को पुनः सुलैमान के बेटे
रहूबियाम के अधिकार में कर दे। 22,23 फिर
प्रभु का संदेश प्रभु के दास शमायाह के
पास आया, "यहूदा के राजा सुलैमान के
बेटे रहूबियाम और यहूदा और बिन्यामीन के
सभी परिवार से और सभी लोगों से कहा,
प्रभु का कहना यह है, 24 "अपने इस्राएली
भाईयों पर हमला मत करो। अपने घर वापस
जाओ, क्योंकि यह बात मेरी तरफ़ से हुयी

है।" लोगों ने प्रभु की बात मानी और वापस
अपने घर लौट गए। 25 इसके बाद यारोबाम
ने एप्रैम के पर्वतीय इलाके में शेकेम के
इलाके को मज़बूत किया और वहीं रहने
भी लगा। इसी तरह पनूएल नामक जगह
को भी मज़बूत किया। 26 यारोबाम ने सोचा
कि 'राज्य दाऊद के घराने के अधीन आ
जाएगा। 27 यदि इस्राएली लोग यरूशलेम को
बलिदान चढ़ाने जाएँ, तो उनका मन उनके
मालिक रहूबियाम जो यहूदा का राजा था,
की ओर मुड़ जाएगा। वे लोग मुझे जान से
मार कर यहूदा के राजा रहूबियाम के बन
जाएँगे।" 28 इसलिए राजा ने सलाह लेकर
सोने के दो बछड़े बना कर लोगों से कहा,
"यरूशलेम जाना तो तुम्हारी ताकत के बाहर
है। इसलिए हे इस्राएल अपने देवताओं पर
दृष्टि करो जो तुम्हें मिस्र की गुलामी से मुक्त
कराकर लाए हैं।" 29 एक बछड़े की मूर्ति को
बेतेल और दूसरे को दान में रखा। 30 यह तो
गुनाह था क्योंकि दण्डवत् करने लोग दान
तक जाने लगे। 31 यारोबाम ने ऊँची जगहों
पर भवन बनवाए। ऐसे पुरोहित[a] ठहराए जो
लेवी वंश के नहीं थे। 32 यारोबाम ने आठवें
महिने के पन्द्रहवें दिन को यहूदा के त्यौहार
की तरह एक त्यौहार की शुरूआत की। वह
वेदी पर कुर्बानी भी चढ़ाने लगा। बेतेल में
उसने अपने बनवाए बछड़ों के लिए वेदी पर
बलि की। उसने अपने बनाए हुए ऊँचे स्थानों
के पुरोहितों को बेतेल में ठहराया। 33 जिस
महीने के बारे में उसने सोचा था - आठवें
महिनै का पन्द्रहवाँ दिन, उस दिन वह बेतेल
में अपनी बनवायी हुयी वेदी पर चढ़ गया।
इस्राएलियों के लिए उसने एक त्यौहार की
शुरूआत की। वह धूप जलाने के लिए वेदी
तक गया।

13 प्रभु परमेश्वर से संदेश हासिल
करके एक व्यक्ति यहूदा से बेतेल
आया। उस समय धूप जलाने के लिए
यारोबाम वेदी के पास ही खड़ा हुआ था।
2 उस व्यक्ति ने प्रभु की ओर से वेदी
के खिलाफ़ कहा, "हे वेदी, हे वेदी, प्रभु
का कहना यह है, सुनो, दाऊद के वंश
में एक बेटा पैदा होगा। उस का नाम
योशिय्याह होगा जो पुरोहित तेरे सामने धूप
जलाते हैं, उन्हें वह वेदी पर ही कुर्बान
कर डालेगा। इन्सानों की हड्डियाँ तेरे ऊपर
जलायी जाएँगी।" 3 इस नबी ने उसी दिन एक
निशान भी सबूत के लिए दे दिया, "सबूत
इस बात का यह होगा, कि वेदी फट जाएगी।
इस पर पड़ी राख बिखर जाएगी।" 4 बेतेल के
खिलाफ़ यह बात सुन कर यारोबाम ने आज्ञा
दी कि उस व्यक्ति को हिरासत में लिया जाए।
जिस हाथ को उसने बढ़ाया था, वह सूख
गया और वैसा का वैसा रह गया। 5 वेदी फट
गयी, राख बिखर गयी। इस तरह से चिन्ह
पूरा भी हो गया, जिस के बारे में प्रभु के नबी
ने कहा था। 6 तब राजा नबी से बोला, "मेरे
लिए अपने प्रभु से सिफ़ारिश करो, ताकि मेरा
हाथ जैसा था, वैसा हो जाए।" तब नबी ने
प्रभु की दोहाई दी और राजा का हाथ जैसा
था वैसा हो गया 7 फिर राजा उस से बोला,
"मेरे साथ चलो और थोड़ा आराम करो,
साथ ही मैं तुम्हें ईनाम भी दूँगा।" 8 प्रभु के
उस दास नबी ने कहा, "चाहे तुम मुझे अपनी
आधी दौलत भी दे दो, तौभी तुम्हारे घर नहीं
आऊँगा। मैं इस जगह खाना तो खाऊँगा ही
नहीं, पानी भी नहीं पीऊँगा। 9 ऐसा इसलिए है
क्योंकि प्रभु का मुझे यह आदेश मिला है कि
मैं इस स्थान में न खाऊँ, न पीऊँ और न उस
रास्ते से लौटूँ, जिस से तुम होकर जाओगे।"

[a] **12.31** याजक

10 इसलिए वह उस रास्ते से जिस से बेतेल
को गया था, न लौटते हुए दूसरे रास्ते से चला
गया 11 बेतेल में एक बुज़ुर्ग नबी रहा करता
था। प्रभु के उस नबी ने उस दिन बेतेल में
क्या-क्या किया था, यह सब आकर अपने
पिता को बताया। उसने वे बातें भी अपने
पिता को कह सुनायीं, जो उसने राजा से कही
थीं। 12 उसके बेटे यह देख रहे थे कि यहूदा
से आया वह व्यक्ति किस रास्ते से वापस
चला गया। उन्होंने अपने पिता को यह सब
बता दिया। 13 उस बूढ़े नबी ने कहा, “मेरे
लिए गदहे पर काठी बाँधो।” उन्होंने वैसा
ही किया और वह उस पर बैठ कर चल
दिया। 14 कुछ दूर चलने के बाद उसने प्रभु
के उस नबी को बांज के पेड़ के नीचे बैठे
देखा। उसने उस से पूछा, “यहूदा से आए हुए
नबी तुम ही हो क्या? 15 वह बोला, “चलो
मेरे घर आकर खाना खा लो।” 16 उसने उस
से कहा, “मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकता हूँ
और न ही खाना खाऊँगा या पानी पीऊँगा।
17 प्रभु परमेश्वर ने मुझे यह हुक्म दिया है
कि न ही यहाँ खाना, खाना, पानी पीना और
न ही उस रास्ते से वापस आना जिस से
तुम आए हो उस से वापस जाना।” 18 बुज़ुर्ग
नबी बोला, “जैसे तुम नबी हो, वैसे ही मैं
भी हूँ। एक स्वर्गदूत ने मुझ से कहा है, कि
तुम्हें मैं ले आऊँ और खाना खिलाऊँ। यह
सब झूठ था। 19 वह नबी उसकी बात में
आकर उसके संग लौट गया। उसने उसके
घर में खाना खाया और पानी पीया। 20 मेंज़
पर बैठते ही प्रभु का संदेश उस बूढ़े नबी के
पास आया, जो दूसरे नबी को झुठला कर ले
आया था। 21 उसने चिल्लाकर यहूदा से आए
नबी से कहा, “प्रभु का कहना यह है “तुमने
प्रभु की दी हुई आज्ञा को नहीं माना। 22 यह
भी कि तुमने उसी जगह खाना पीना किया,
इसलिए तुम्हें तुम्हारे पुरखाओं के साथ मिट्टी
नहीं दी जाएगी।” 23 उसके खाने-पीने के बाद
बूढ़े नबी ने प्रभु के उस जन के लिए गदहे
पर काठी बन्धवायी। 24 रास्ते में जाते हुए
उसे एक शेर मिला। शेर ने उसे जान से मार
डाला। उसकी मृतक देह वहीं पड़ी रही और
गदहा तथा शेर वहीं खड़े थे। 25 आने-जाने
वाले लोगों ने यह देख कर बूढ़े नबी को खबर
दे दी। 26 यह समाचार मिलते ही बुज़ुर्ग नबी
को शक हुआ कि हो न हो यह वही व्यक्ति
है, जिस ने प्रभु की बात नहीं मानी और प्रभु
ने उसे शेर का शिकार बनने दिया।” 26 यह
सुनकर उस नबी ने जो उसको रास्ते से लौटा
लाया था, कहा कि परमेश्वर का वही जन
होगा, जिस ने प्रभु के आदेश के विरुद्ध किया
था, इसीले प्रभु ने उसे शेर के हाथ पड़ने
दिया। और प्रभु के वचन के अनुसार जो
उसने उससे कहा था, शेर ने उसे मार दिया
होगा। 27 तब उसने अपने बेटों से कहा,” मेरे
लिए गदहे पर काठी बान्धो, जब उन्होंने
ऐसा किया, 28 तब उसने जाकर उस जन की
लाश रास्ते पर पड़ी हुई और गदहे और शेर
दोनों को लाश के पास खड़े पाया। शेर ने न
ही लोथ को खाया और न ही गदहे को मारा
था। 29 तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन
की लाश उठाकर गदहे पर लादी और उसके
लिए विलाप करने लगा। वह उसे दफनाने
अपने नगर में लौटा ले गया। 30 उसने उसकी
लाश को अपने कब्रिस्तान में रखा। वहाँ
आकर लोग अपनी छाती पीटने लगे। 31 फिर
उसे दफनाकर उसने अपने बेटों से कहा, "
जब कभी मैं मरूँ, तब मुझे भी इस कब्रिस्तान
में रखना, मेरी हड्डियों को उसी की हड्डियों के
पास रखना। 32 क्योंकि उसने प्रभु से पाकर
जो वचन बतेल की वेदी और शोमरोन के
नगरों के सभी ऊँचे स्थानों के भवनों के

खिलाफ़ पुकारकर कहा था, वह सब पूरा
हो जाएगा। 33 इसके बाद यारोबाम अपने बुरे
चालचलन से न मुड़ा। उसने फिर सभी तरह
के लोगों में से ऊँचे स्थानों के पुरोहित बनाए,
वरन जो कोई चाहता था, उसका संस्कार
करके, वह उसको ऊँचे स्थानों का पुरोहित
होने को ठहरा देता था। 34 यह बात यारोबा
के घराने का गुनाह ठहरी, इसलिए वह बर्बाद
हुआ और इस पृथ्वी पर से नाश किया गया।

14 यारोबाम का पुत्र अबिय्याह एक
बार बीमार हुआ। 2 अपनी पत्नी से
वह बोला, “तुम अपना भेष बदलो, ताकि
तुम्हें कोई पहचान न सके। तुम शीलो वासी
अहिय्याह नबी के पास जाओ, जिस ने
मुझे वचन दिया था कि मैं राजा बनूँगा।
3 तुम दस रोटियाँ, टिकियाँ और एक बोतल
शहद लेकर उसके पास जाओ। हमारे बेटे
के बारे में वही बताएगा। 4 यारोबाम की
पत्नी ने अपने पति के कहने के अनुसार
किया। लेकिन बुढ़ापे की वजह से अहिय्याह
को साफ़-साफ़ नहीं दिखता था। 5 प्रभु ने
अहिय्याह को पहले से बता दिया था कि
यारोबाम की पत्नी किस तरह की चालबाजी
करेगी। 6 अहिय्याह के दरवाज़े पर आते ही
आहट को पहचान कर, वह बोल उठा, “हे
यारोबाम की पत्नी तुम यह सब नाटक क्यों
कर रही हो? मुझे तुम्हारे लिए खतरनाक
संदेश मिला है। 7 जाकर यारोबाम से कहना,
“इस्राएल के प्रभु परमेश्वर तुम से यह कहते
हैं कि मैंने तुम्हें बढ़ाकर ऊँचा किया था।
8 मैंने दाऊद के घराने से राज्य छीन कर
तुम्हें दिया, लेकिन तुम मेरे दास दाऊद की
तरह बने न रहे। वह तो मेरी बातें मानता
था और पूरे मन से मेरे रास्ते पर चलता रहा
था। जो मेरी निगाह में सही था, वह किया
करता था। 9 तुम से पहले जो हुए हैं, उन
सब से अधिक बुराई तुमने की है। तुमने
पराए देवता की उपासना की और ढाल कर
मूर्तियाँ बनायी हैं। इसलिए मुझे गुस्सा आया
है। तुमने मुझे तुच्छ समझा है। 10 इसलिए
मैं यारोबाम के परिवार पर मुसीबत डालूँगा।
उसके परिवार के हर एक लड़के, गुलाम या
आज़ाद - इस्राएल के बीच प्रत्येक रहने वाले
को बर्बाद कर डालूँगा। जिस तरह पड़े हुए
गोबर को साफ़ किया जाता है, ठीक इसी
तरह मैं यारोबाम के घर की सफ़ाई करूँगा।
11 यारोबाम के परिवार के जिस सदस्य की
मौत होती है, उसे कुत्ते खा जाएँगे। जो मैदान
में मरेगा, उसे आकाश के पक्षी खा जाएँगे।
यह प्रभु की कही हुयी बात है। 12 इसलिए
तुम उठ कर अपने घर चली जाओ। नगर
के अन्दर तुम्हारे पैर पड़ते ही, वह बालक
मर जाएगा। 13 छाती पीटते हुए इस्राएली उसे
दफ़नाएँगे। यारोबाम की औलाद में से केवल
उसे ही कबर मिलेगी। ऐसा इसलिए क्योंकि
यारोबाम के घराने में वही मात्र ऐसा है, जिस
में प्रभु के दृष्टिकोण से कुछ अच्छा पाया
जाता है। 14 इस्राएल के लिए प्रभु एक ऐसे
राजा को उठा कर खड़ा करेंगे, जो उसी दिन
यारोबाम के घराने को बर्बाद कर डालेंगे।
15 प्रभु इस्राएल को ऐसी सज़ा देंगे, जैसे पानी
के बहाव से नरकट हिलाया जाता है। प्रभु
उन्हें इस बढ़िया ज़मीन से जो उनके पूर्वजों
को दी गयी थी, उखाड़ कर समुद्र के उस पार
तित्तर-बित्तर कर देंगे। कारण यह है कि इन
लोगों ने अशेरा नाम की मूरतें अपने लिए बना
ली हैं। इस से प्रभु का गुस्सा भड़क चुका है।
16 जो अपराध यारोबाम ने खुद किए और
इस्राएल से करवाए, उनके कारण प्रभु इन
लोगों को त्याग देंगे।” 17 यह सब सुन कर
यारोबाम की पत्नी उठी और चल कर तिरजा

पहुँची। घर की डेवढ़ी पर उसके पाँव रखते
ही, बच्चे की जान निकल गयी। 18 तब पूरे
इस्राएल ने उसे दफ़ना कर शोक मनाया। यह
बात प्रभु ने अपने दास अहिय्याह के द्वारा
पहुँचायी थी 19 यारोबाम के राज्य करने और
युद्ध करने के बारे में इस्राएल के राजाओं
की किताबों में लिखा हुआ है। 20 यारोबाम
ने बाईस साल तक राज्य किया और उसके
बाद मर गया। उसके मरने के बाद उस का
बेटा नादाब, राजा बनाया गया। 21 सुलैमान
का बेटा रहूबियाम, यहूदा के ऊपर शासन
कर रहा था। इकतालीस वर्ष का होने के
बाद उसने राज्य करना आरम्भ किया था।
उसकी माँ अम्मोन की थी और उस का
नाम नामाह था। यरूशलेम में रहूबियाम सत्रह
साल तक राज्य करता रहा। इसी नगर को
सारे इस्राएली गोत्रों में से अपना नाम रखने
के लिए, प्रभु ने चुना था। 22 प्रभु की दृष्टि में
जो बुरा था, यहूदी वे करने लगे। अपने पूर्वजों
से अधिक गुनाह करके उन्होंने प्रभु के क्रोध
को भड़काया। 23 ऊँचे टीलों पर, हरे पेड़ों के
नीचे, ऊँचे स्थान, लाटें और अशेरा नामक
मूर्तियाँ बनायी। 24 उनके देश में पुरुषगामी
भी थे। वे उन देशों के से सब घिनौने काम
करते थे, जिन्हें प्रभु ने इस्राएलियों के सामने
से निकाल दिया था। 25 राजा रहूबियाम के
पाँचवे साल में मिस्र के राजा शीशक ने
यरूशलेम पर हमला बोल दिया। 26 वह प्रभु
के भवन की कीमतें चीजें और राजमहल की
कीमती चीजें लूट ले गया। जिन सोने की
ढालों को सुलैमान ने बनवाया था, वे भी वह
ले गया। 27 इसलिए राजा रहूबियाम ने उनके
बदले पीतल की ढालें बनवायी। उन ढालों
को चौकीदारों के प्रमुख के हाथ सौंप दीं, जो
राजभवन के किवाड़ों की रखवाली किया
करते थे। 28 जब-जब राजा प्रभु के भवन में
जाया करता था, तब-तब पहरूए उन्हें उठा
कर ले चलते थे। बाद में वे अपनी कोठरी
में लाकर रख दिया करते थे। 29 रहूबियाम
के दूसरे और काम क्या यहूदा के राजाओं
के इतिहास के किताब में नहीं लिखे है?
30 रहूबियाम और यारोबाम हमेशा लड़ते रहा
करते थे। 31 फिर रहूबियाम का देहान्त हो
गया। दाऊदपुर ही में उसे दफ़नाया गया।
उसके बाद उस का बेटा अबिय्याम राज्य
करने लगा।

15 नाबात के बेटे यारोबाम के शासन
के अठारहवें साल में यहूदा पर
अबिय्याम राज्य करने लगा 2 तीन साल तक
वह यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी माँ
अबशालोम की बेटी था, जिस का नाम माका
था। 3 वह भी अपने पिता के रास्ते पर चलता
रहा। उस का मन पूरी तरह अपने परदादा
दाऊद की तरह प्रभु से लगा नहीं रहा। 4 फिर
भी दाऊद के कारण उसके प्रभु परमेश्वर ने
यरूशलेम में उसे एक दीपक दिया। अर्थात्
उसके बेटे को राज्य करने के लिए ठहराया।
इस तरह से यरूशलेम बना रहा। 5 जो कुछ
प्रभु की आँखों में उचित था, दाऊद वही
किया करता था। हित्ती उरिय्याह और उसकी
पत्नी के साथ घटी घटना के अलावा किसी
और बात में जीवन भर दाऊद ने प्रभु की
आज्ञा नहीं तोड़ी थी। 6 रहूबियाम के पूरे राज्य
काल में उस का संघर्ष यारोबाम से जारी
रहा। 7 वे सभी काम जो अबिय्याह ने किए
थे, क्या राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
नहीं लिखे गए थे? अबिय्याम और यारोबाम
के बीच भी लड़ाईयाँ होती रहीं। 8 अबिय्याम
की मौत के बाद दाऊदपुर ही में उसे मिट्टी दी
गयी। उसकी जगह उस का बेटा काम-काज
संभालने लगा। 9 इस्राएल के राजा यारोबाम

के बीसवें साल में आसा ने यहूदा पर शासन
करना शुरू किया। 10 इकतालीस वर्ष तक
वह यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसकी
माँ माका थी, जो अबशालोम की बेटी थी।
11 अपने पूर्वज दाऊद की तरह आसा भी
प्रभु की दृष्टि में सही जीवन बिताता रहा।
12 पुरुषगामी लोगों ने उसने देश से निकाल
दिया। उसके पुरखाओं द्वारा बनायी गयी
मूर्तियों को उसने निकाल फेंका। 13 यहाँ
तक कि उसकी माता माका जिस ने अशेरा
की घिनौनी मूर्ति बनवायी थी, राज माता
के पद से उतार दिया और मूर्ति को तोड़
कर किद्रोन नाले में जला डाला। 14 आसा
पूरे मन से प्रभु से प्रेम करता रहा, लेकिन
इसके बावजूद ऊँचे स्थानों को तोड़ा न गया।
15 जिन बर्तनों, सोने और चाँदी को उसके
पिता ने अर्पण किया था और जो उसने खुद
अर्पण किए थे, उन सभी को उसने प्रभु के
घर में पहुँचा दिए। 16 आसा के जीवन भर
उसकी लड़ाई इस्राएल के राजा बाशा से होती
रही। 17 इस्राएल के राजा बाशा ने यहूदा पर
आक्रमण कर दिया। उसने रामा को इसलिए
मज़बूत किया, ताकि यहूदा के राजा आसा
तक कोई आसानी से न जाने पाए। 18 तब
आसा ने प्रभु के भवन और राजमहल दोनों
में शेष बचे सोने-चाँदी को निकाला। वह सब
उसने अपने कर्मचारियों के माध्यम से अराम
के राजा बेन्हदद के पास भेज कर कहा,
“मेरी इच्छा है कि जिस तरह से मेरे और
तुम्हारे पिता के बीच वाचा थी, हमारे बीच
भी बाँधी जाए। 19 मैं तुम्हारे लिए सोना-चाँदी
ईनाम में भेज रहा हूँ। आओ, तुम्हारी जो
वाचा इस्राएल के राजा बाशा से है, उसे
तोड़ दो, ताकि वह मेरे पास से चला जाए।”
20 बेन्हदद ने राजा आसा की यह बात मान
ली। उसने अपने दलों के सेनापतियों[a] से
इस्राएली नगरों पर हमला करवा दिया। इस
तरह इय्योन दान, आबेल्वेत्माका और सारे
किन्नेरेत को और नप्ताली के पूरे देश को जीत
लिया। 21 यह समाचार सुनने पर बाशा ने रामा
को मज़बूत बनाने का इरादा छोड़ दिया। वह
आकर तिर्सा में रहने लगा। 22 राजा आसा ने
पूरे यहूदा में ऐलान करवाया। तब वे रामा के
पत्थरों और लकड़ियों को जिन से वह रामा
को मज़बूत कर रहा था, उठा कर भाग गए।
23 आसा के मज़बूत किए हुए नगर और दूसरे
काम क्या यहूदा के राजाओं की किताब
में नहीं हैं? 24 अन्ततः आसा मर गया और
दाऊदपुर में ही उसे मिट्टी दी गयी। उसके बाद
राजासन पर यहोशापात बैठ गया। 25 यहूदा
के राजा आसा के दूसरे साल में यारोबाम का
बेटा नादाब इस्राएल पर राजा ठहराया गया।
उस का राजकाल दो वर्ष का रहा। 26 जो बातें
प्रभु को पसन्द नहीं थीं, वही उसने की। जैसी
बुराई उसके पिता ने खुद की और इस्राएल से
करवायी, वैसी ही उसने स्वयं की। 27 नादाब
पलिश्तियों के देश के गिब्बतोन नगर को
सभी इस्राएलियों के साथ मिल कर घेरे हुए
था। इस्साकार के कबीले के अहिय्याह के
बेटे बाशा ने उसके विरोध बलवा करने की
योजना बना कर उसे गिब्बतोन के पास ही
मार डाला। 28 इस तरह यहूदा के राजा आसा
के तीसरे वर्ष में बाशा ने नादाब को मार
दिया। वह स्वयं राजा भी बन गया। 29 राजा
बनने के बाद बाशा ने यारोबाम के पूरे घराने
को भी बर्बाद कर दिया। उसने यारोबाम के
वंश के एक-एक सदस्य को चुन-चुन कर
मारा। यह सब प्रभु के उन शब्दों के अनुसार
हुआ, जो उन्होंने अपने दास शीलोवासी
अहिय्याह के द्वारा कहा था। 30 यह इसलिए

[a] **15.20** प्रधानों

हुआ क्योंकि यारोबाम ने खुद भी दुष्टता
की थी और इस्राएल से भी करवायी थी।
उसने इस्राएल के प्रभु को गुस्सा दिलाया
था। 31 क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास
की किताब में नादाब के अन्य कामों का
वर्णन नहीं है? 32 यहूदा के राजा आसा और
इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनकी पूरे
राजकाल में युद्ध होता रहा। 33 यहूदा के राजा
आसा के तीसरे साल में अहिय्याह का बेटा
बाशा, तिर्सा में पूरे इस्राएल पर शासन करने
लगा, और चौबीस साल तक राज्य करता
रहा। 34 प्रभु की निगाह में जो कुछ अनुचित
था, वही उसने किया। वह यारोबाम के रास्ते
पर वही अपराध करता रहा, जिसे उसने
इस्राएल से करवाया था ।

16 हनानी के बेटे येहू के पास बाशा के
बारे में संदेश पहुँचा। 2 "मिट्टी से मैंने
तुम्हें उठाया और अपनी प्रजा के ऊपर राज्य
करने का अधिकार दिया। लेकिन तुम्हारा
जीवन यारोबाम की तरह रहा है। तुम मेरे
लोगों से वही गलत काम करवाते आए हो,
जिन से मुझे चिढ़ है। 3 सुनो, मैं बाशा और
उसके घराने को मैं बिल्कुल मिटा डालूँगा। मैं
तुम्हारे घराने को नबात के बेटे यारोबाम की
तरह कर डालूँगा। 4 यदि बाशान के खानदान
का कोई व्यक्ति कहीं मर जाए, तो उसे कुत्ते
खा डालेंगे। यदि उस का कोई मैदान में मरे
तो चिड़ियाँ उसे नोचकर खा डालेंगी। 5 बाशा
की बहादुरी के और दूसरे काम क्या इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की किताब में लिखे
हुए नहीं हैं? 6 अन्त में उस का देहान्त हो
गया और उसे तिर्सा में दफ़ना दिया गया।
उसके बाद उस का पुत्र एला राजा बन गया।
7 हनानी के बेटे येहू के द्वारा, बाशा और
उसके परिवार के खिलाफ़ प्रभु का जो संदेश
आया था, उस का एक कारण था, प्रभु को
अपने कामों से गुस्सा दिलाना। दूसरा यह कि
उसने नादाब को मार भी डाला था। 8 यहूदा
के राजा आसा के छब्बीसवें वर्ष में बाशा का
बेटा एला तिर्सा में शासन करने लगा था।
वह दो साल तक राज्य कर सका। 9 एक
बार अर्सा नामक भण्डारी के घर में, जो
एला के तिर्सा वाले भवन का प्रधान था, नशे
में मतवाला हो गया। 10 तभी एक कर्मचारी
जिम्री ने राजद्रोह करके उसे मार डाला।
यह कर्मचारी तकरीबन आधे रथों के ऊपर
अधिकारी था। वह स्वयं राजा भी बन गया।
ऐसा आसा राजा के शासन के सताइसवें
साल में हुआ। 11 जैसे ही उसने राज्य करना
आरम्भ किया, उसने बाशा के पूरे घराने का
सफ़ाया कर डाला। उसने उसके दोस्तों के
साथ भी ऐसा बर्ताव किया। 12 इस तरह से
प्रभु के उन शब्दों के मुताबिक जो उन्होंने
येहू भविष्यद्वक्ता के मुख से राजा बाशा के
खिलाफ़ में कहे थे, जिम्री ने बाशा का पूरा
परिवार समाप्त कर डाला। 13 यह सब कुछ
इसलिए हुआ क्योंकि बाशा और एला दोनों
ही प्रभु के रास्ते से भटक चुके थे। वैसे ही
अपराध उन्होंने अपने लोगों से भी करवाए
थे। इस कारणवश प्रभु का गुस्सा भड़का था।
14 एला के अन्य दूसरे काम क्या इस्राएल के
राजाओं की किताब में बताए नहीं गए हैं।
15 यहूदा के राजा आसा के सत्ताइसवें साल
में जिम्री तिर्सा में शासन करने लगा। उसने
तिर्सा में सात दिन तक ही राज्य किया। उन
दिनों में लोग पलिश्तियों के देश गिब्बतोन
के खिलाफ़ डेरे डाले हुए थे। 16 उन्हें खबर
मिली कि जिम्री ने बलवा की योजना बनायी
है और राजा का खून कर दिया है। यही
नहीं, पूरे इस्राएल ने ओम्री सेनापति को राजा
बना दिया है। 17 तभी ओम्री ने पूरे इस्राएल

को लिया, गिब्बतोन को छोड़ तिर्सा को घेर
लिया। 18 जब जिम्री ने देखा कि नगर को
ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट
में जाकर राजभवन में आग लगा दी और
उसी में खुद जाकर आत्महत्या कर ली।
19 यह सब उसके अपराधों का फल था।
उसने वही काम किए थे, जो प्रभु की दृष्टि में
बुरे थे। उसकी जीवन शैली यारोबाम की सी
थी। 20 जिम्री के दूसरे कार्य और जो राजद्रोह
की योजना उसने बनायी थी वह इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की किताब में हैं। 21 तब
इस्राएली प्रजा दो हिस्सों में बँट गयी। प्रजा
के आधे लोग तिब्नी नाम के गीनत के बेटे
को राजा बनाने के लिए उसके पीछे चल
दिए। आधे लोग ओम्री के साथ थे। 22 अन्त
में ओम्री के साथ हो लेने वाले तिब्नी के
साथ हो लेने वालों पर भारी पड़ने लगे। इस
कारणवश तिब्नी का खून कर दिया गया
और ओम्री राजा बन गया। 23 यहूदा के राजा
आसा के इकतीसवें साल में ओम्री इस्राएल
पर राज्य करने लगा। वह बारह साल तक
राज्य करता रहा। तिर्सा में उसने छैः साल
तक राज्य किया। 24 शेमेर से शोमरोन पहाड़
को उसने 70 कि.ग्रा. सोने में खरीदा उस पर
उसने एक नगर बसाया। अपने बसाए हुए
नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के
नाम पर शोमरोन रखा। 25 प्रभु की निगाह में
जो कुछ बुरा था वही उसने किया। यहाँ तक
कि अपने से पहले वालों से ज़्यादा। 26 नबात
के बेटे यारोबाम का सा उस का रहन-सहन
था। जिन बुराईयों को उसने इस्राएलियों से
करवाया, उनके कारण प्रभु का प्रकोप उन
पर भड़का। 27 ओम्री के कामों का वर्णन और
बहादुरी के काम, क्या इस्राएल के राजाओं
की किताब में दर्ज नहीं किए गए हैं? 28 ओम्री
के मरने पर उसे शोमरोन में दफ़ना दिया
गया। उसकी जगह उसके बेटे आहाब ने ले
ली। 29 यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें
वर्ष में ओम्री का बेटा आहाब इस्राएल पर
राज्य करने लगा। इस्राएल में शोमरोन पर
उसने बाईस वर्ष तक राज्य किया। 30 प्रभु
के विरोध में आहाब ने अपने से पहले के
राजाओं से अधिक कुकर्म किए। 31 उसने
नबात के बेटे यारोबाम के गुनाहों में बने
रहना तो हलकी बात जानी थी। उसने तो
सिदोनियों के राजा एतबाल की बेटी इज़ेबेल
से ब्याह करके बाल देवता की पूजा की।
32 शोमरोन में बाल की एक इमारत बना कर
बाल की वेदी भी बनायी। 33 अपने से पहले
हुए राजाओं से अधिक दुष्टता उसने की,
और प्रभु क्रोध दिलाया। 34 उसी के दिनों में
बेतेलवासी हीएल ने यरीहो का पुनः निर्माण
किया। जब उसने उसकी नींव डाली, तभी
उस का बड़ा बेटा अबीराम गुज़र गया। जब
उसने उसके फ़ाटक बनाए तब उस का छोटा
बेटा सगूब न रहा। यह प्रभु की कही बात के
अनुसार हुआ जिसे उन्होंने नून के बेटे यहोशू
के द्वारा कही थी।

17 तिशबी एलिय्याह गिलाद का
परदेशी था। वह आहाब से बोला,
“इस्राएल के प्रभु परमेश्वर जिन की
मौजूदगी में, मैं जीवन जीता हूँ, यह कह
रहा हूँ कि बिना मेरे कहे न ही बारिश होगी
और न ओस गिरेगी।” 2 तब प्रभु का यह
संदेश उस तक पहुँचा, 3 “यहाँ से निकलो
पूर्व में जाओ और यर्दन के पूर्व में करीत
नाले में छिप जाओ 4 उस नाले का पानी तुम
पीना। कौवों को मैंने आदेश दिया है, कि वे
तुम्हें खाना खिलाएँ।” 5 प्रभु की यह आज्ञा
मानकर वह यर्दन नदी के पूर्व में करीत नाले
में जाकर छिप गया। 6 सुबह और शाम को

कौवे रोटी और गोश्त खाने के लिए लाया
करते थे। उसी नाले का पानी वह पिया
करता था। 7 कुछ दिन के बाद उस देश में
बारिश न होने से नाले का पानी सूख गया।
8 तब प्रभु का संदेश उसे मिला, 9 "सीदोन
के सारपत नगर में जाकर रहो। मैंने एक
विधवा को आज्ञा दी है कि वह तुम्हें खाना
खिलाए।" 10 यह संदेश पाकर एलिय्याह
वहाँ से चल कर सारपत आया। नगर के
फ़ाटक पर आते ही उसने एक विधवा को
लकड़ी बिनते देखा। उसने उस से पीने का
पानी माँगा। 11 जब वह पानी लेने जाने
लगी, तभी उसने उस से खाने के लिए कुछ
माँगा 12 वह बोली, "मेरे पास एक भी रोटी
नहीं हैं। मुट्ठी भर आटा और बोतल में थोड़ा
सा तेल है। ये लकड़ियाँ बीनने के बाद
जाकर खुद के लिए और अपने बेटे के लिए
जीवन का आखिरी खाना बनाऊँगी। उसके
बाद तो हमें मरना ही है।" 13 एलिय्याह
उस से बोला, "डरो मत, जैसे कह रही हो,
करो लेकिन पहले मेरे लिए एक छोटी-रोटी
बना कर लाओ। बाद में तुम अपने और
अपने बेटे के लिए बनाना। 14 इस्राएल के
प्रभु परमेश्वर का कहना है कि, जब तक
बरसात न हो, तब तक तुम्हारे घर का आटा
और तेल खत्म नहीं होगा।" 15 लौटकर
उसने वैसा ही किया और तब से वह महिला
और उस का परिवार बहुत समय तक खाना
खा सके। 16 प्रभु की कही उस बात के
अनुसार जो एलिय्याह द्वारा कही गयी थी,
न तो उसके घर का आटा खत्म हुआ और
न ही तेल। 17 कुछ समय बाद उस महिला
का लड़का बीमारी के फलस्वरूप मर गया।
18 तब उसने एलिय्याह से कहा, "क्या तुम
मेरे यहाँ इसलिए आए हो, कि मेरे बेटे की
मौत का कारण बनो और मेरी बुराईयों को[a]
याद दिलाओ? 19 एलिय्याह बोला, "अपने
बेटे को मुझे दो।" तब उसने बेटे को उसकी
गोद से लिया और छज्जे में गया। वहाँ
जाकर उसने उसे चारपाई पर लिटा दिया।
20 तभी उसने प्रभु को पुकारा, 'हे मेरे प्रभु
परमेश्वर, क्या इस विधवा के बेटे को मार
डाल कर, इस पर मुसीबत आपने डाली
है?" 21 ऐसा कह कर वह बालक के ऊपर
तीन बार लेट गया और प्रभु को पुकार कर
कहा, "हे मेरे प्रभु परमेश्वर, इसकी जान
इस में वापस डाल दीजिए।" 22 एलिय्याह
की यह प्रार्थना प्रभु ने सुन ली और उसे
जीवित कर दिया 23 तब एलिय्याह बालक
को छज्जे से नीचे घर में ले गया। माता के
हाथ सौंपते हुए वह बोला, "यह लो अपना
जीवित बेटा।" 24 तब वह महिला बोली,
"अब मैं जान गयी हूँ कि तुम प्रभु के दास
हो, और प्रभु की जो बात तुम्हारे मुँह से
निकलती है, वह सच होती है।"

18 तीसरे साल में प्रभु का यह
संदेश एलिय्याह को मिला, "जाओ,
आहाब के सामने प्रस्तुत हो और मैं बारिश
भेजूँगा।" 2 उस समय शोमरोन भारी आकाल
की चपेट में था और एलिय्याह आहाब
से मिलने गया 3 आहाब के घराने के
दीवान ओबद्याह को एलिय्याह ने बुलवाया।
ओबद्याह प्रभु और उनके नबियों का आदर
करता था। 4 जिस समय इज़ेबेल प्रभु के
भविष्यद्वक्ताओं को मार डाल रही थी, उसने
भविष्यद्वक्ताओं को पचास-पचास करके
गुफ़ाओं में छुपाया था। साथ ही खाना-पीना
भी मुहैया कराता रहा। 5 आहाब ने ओबद्याह
से कहा, "देश में पानी के सभी सोतों और

[a] **17.18** अपराधों को

नदियों के पास जाओ। वहाँ हमारे घोड़ों
और खच्चरों के लिए चारा मिल सकेगा
और हमारे जानवर मरने से बच जाएँगे।
6 उन्होंने अपने काम को आपस में बाँट
लिया - एक तरफ़ आहाब चल दिया और
दूसरी तरफ़ ओबद्याह। 7 रास्ते में जाते समय
ओबद्याह की मुलाकात एलिय्याह से हुयी।
वहीं एलिय्याह को उसने प्रणाम किया और
पूछा कि क्या वह एलिय्याह है। 8 उसने
जवाब में कहा, “हाँ मैं हूँ। अपने मालिक को
जाकर बता दो।” 9 उसने कहा, “मैंने ऐसा
कौन-सा अपराध किया है, कि तुम मरवा
डालने के लिए आहाब के सुपुर्द करना चाहते
हो 10 तुम्हारे प्रभु की शपथ, ऐसा कोई राष्ट्र
या राज्य नहीं है, जहाँ तुम्हें ढूँढने के लिए मेरे
मालिक ने कुछ कसर रख छोड़ी हो। 11 और
अब तुम कह रहे हो कि मैं अपने मालिक को
बतलाऊँ कि तुम यहाँ हो 12 फिर जैसे ही मैं
तुम्हारे पास से चला जाऊँगा, वैसे ही प्रभु का
आत्मा क्या पता ‘तुम्हें कहाँ उठा ले जाएगा
इसलिए यदि मैं अपने मालिक को सूचना दूँ
और तुम्हारा अता-पता न मिले, तो वह मेरी
जान ले लेगा। 13 क्या मेरे प्रभु को यह नहीं
बतलाया गया है, कि नबियों के ऊपर इज़ेबेल
के अत्याचार के समय में मेरी भूमिका क्या
थी? मैंने नबियों को पचास-पचास की संख्या
में गुफ़ा में छिपा रखा था। मैंने उनके भोजन
का इन्तज़ाम भी किया था 14 फिर अब
तुम मुझ से कह रहे हो कि मैं आहाब को
बताऊँ कि एलिय्याह मिल गया है। तब
तो वह मेरी जान ले लेगा।” 15 एलिय्याह
बोला, “सेनाओं के प्रभु जिन की इच्छा में
मैं चलता हूँ, उनके जीवन की शपथ मैं आज
ही उस से मिलूँगा। 16 तब ओबद्याह आहाब
से मुलाकात करने चल दिया और उसे बता
दिया। इसलिए आहाब एलिय्याह से मिलने
चल पड़ा 17 एलिय्याह को देखते ही आहाब
बोल उठा, “हे इस्राएल को परेशान करने
वाले क्या तुम्हीं हो” 18 उसने कहा, “मैंने
इस्राएल को पीड़ा नहीं दी है, लेकिन तुमने
और तुम्हारे पिता के घराने ने। तुम प्रभु को
तज कर बाल देवताओं को पूजने लगे हो।
19 अब संदेशवाहक भेज कर पूरे इस्राएल को
और बाल के साढ़े चार सौ नबियों को जो
इज़ेबेल की मेंज़ से खाते हैं, मेरे पास कर्मेल
पहाड़ पर इकट्ठा कर लो।” 20 तब आहाब ने
सारे इस्राएलियों को बुलाया और नबियों को
कर्मेल पहाड़ पर इकट्ठा किया। 21 एलिय्याह
लोगों के पास आकर बोला, “कब तक तुम
लोग दो मन रखोगे? यदि प्रभु परमेश्वर हैं,
तो उनकी ही मानो। यदि बाआल है तो उसी
को पूजते रहो।” लोग बिल्कुल खामोश रहे।
22 तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, “प्रभु के
नबियों में से केवल मैं ही बचा हूँ। बाल
के नबी साढ़े चार सौ हैं। 23 इसलिए हमें
बछड़े दिए जाएँ और वे एक अपने लिए
चुन कर टुकड़े-टुकड़े काट कर लकड़ी पर
रखें, लेकिन आग न लगाएँ। मैं भी इसी तरह
करूँगा। 24 इसके बाद तुम अपने देवता से
प्रार्थना करना और मैं प्रभु से करूँगा। जो
आग गिराए, वही प्रभु ठहरे।” सभी लोग
चिल्ला उठे, “ठीक है।” 25 एलिय्याह बाआल
के नबियों से बोला, “पहले तुम लोग एक
बछड़ा चुन कर तैयार करो, क्योंकि तुम
लोग संख्या में अधिक हो। तुम अपने देवता
से प्रार्थना करना, लेकिन आग न लगाना।”
26 तब उन्होंने दिए गए बछड़े को तैयार
किया। सुबह से लेकर दोपहर तक वे बिनती
करते रहे, “हे बाल हमारी सुन लो।” लेकिन
उन्हें कोई जवाब न मिला। फिर वे अपनी
बनाई हुयी वेदी के आस-पास कूदने - फांदने
लगे। 27 दोपहर में एलिय्याह ने उनकी हँसी

उड़ाते हुए कहा, “ऊँची आवाज़ से पुकारो। वह तो देवता है कहीं तप कर रहा होगा या कहीं चला गया होगा, यात्रा पर होगा या फिर सो रहा होगा।” 28 जोर-ज़ोर से चिल्लाकर, जैसा वह किया करते थे, अपनी देह को छूरियों और बर्छों से यहाँ तक ज़ख्मी कर डाला, कि खून बहने लगा। 29 भेंट चढ़ाने के समय तक वे नबूवत करते गए, लेकिन न तो कोई आवाज़ सुनी, न कोई जवाब मिला। 30 तब एलिय्याह सब लोगों से बोला, “मेरे पास आओ।” सभी लोग उसके पास आ गए। तब उसने प्रभु की गिरायी वेदी को बनाया। 31 फिर उसने याकूब के बेटों की गिनती के अनुसार, जिसे प्रभु का संदेश मिला था, कि तुम्हारा नाम इस्राएल होगा, बारह पत्थर छाँटे। 32 उन पत्थरों से प्रभु के नाम की वेदी बना कर उसके चारों ओर इतना बड़ा गड्ढा खोदा कि उसमें लगभग पन्द्रह लीटर बीज आ जाएँ। 33 इसके बाद उसने वेदी पर लकड़ी को सज़ा कर बछड़े के टुकड़े काट कर लकड़ी पर रखा और कहा, “चार घड़े पानी भर कर होमबलि पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।” 34 तब उसने कहा, “एक बार फिर वैसा ही करो। उसने उन्हें तीसरी बार फिर वैसा करने को कहा और लोगों ने किया भी। 35 पानी वेदी के चारों ओर बह गया और गड्ढे को भी पानी से भर दिया 36 फिर भेंट चढ़ाने के वक्त एलिय्याह पास जाकर कहने लगा, “हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर। आज यह दिखा दें, कि इस्राएल में आप ही प्रभु हैं और मैं आपका दास हूँ। यह भी कि जो कुछ मैंने किया है, वह सब आप से निर्देष पाकर किया हैं 37 हे प्रभु, होने दें, कि लोग समझ सकें, कि आप प्रभु परमेश्वर हैं, और लोगों के मन को बदल सकते हैं 38 तब प्रभु की आग दिखायी दी और होमबलि की लकड़ी और पत्थरों और धूल सहित भस्म कर दिया। साथ ही गड्ढे के पानी को भी सुखा दिया। 39 यह देखते ही लोग मुँह के बल ज़मीन पर गिरे और बोलने लगे, “प्रभु ही प्रभु हैं, प्रभु ही प्रभु हैं।” 40 एलिय्याह ने उन से कहा, “बाल के नबियों को पकड़ लो, उन में से एक भी बचकर भाग न निकले।” उन्हें पकड़ लिया गया। एलिय्याह उन्हें नीचे कीशोन के नाले में ले गया और मार डाला। 41 तब एलिय्याह आहाब से बोला, “उठो, खाना खाओ, क्योंकि भारी बारिश होने वाली है।” 42 आहाब खाना-खाने चला गया। एलिय्याह कर्मेल पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। उसने ज़मीन पर गिर कर अपने सिर को घुटनों के बीच किया। 43 उसने अपने सेवक से कहा, “चढ़कर समुन्दर की ओर देखो।” उसने देखा और लौटकर बताया कि उसे कुछ नहीं दिखा। एलिय्याह बोला, “सात बार जाओ।” 44 सातवीं बार उसने कहा, “देखो, समुन्दर में से मनुष्य के हाथ की नाप का बादल दिख रहा है।” एलिय्याह ने कहा, “आहाब के पास जाकर कहो, कि रथ जुतवाए, कहीं बारिश के कारण उसे रूकना न पड़े।” 45 थोड़ी ही देर में आकाश में काली घटा छा गयी और मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी। आहाब सवार होकर यिज्रेल को चल भी दिया। 46 तब प्रभु की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी उतरी, कि वह हिम्मत से आहाब के आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया।

19 आहाब ने इज़ेबेल के उन सभी कामों को बताया, जो एलिय्याह ने किए थे। यह भी कि नबियों को किस तरह मार डाला 2 तब इज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत के द्वारा समाचार दिया

कि कल तक यदि मैं तुम्हारा हाल उनकी
तरह न कर डालूँ तो देवता मेरे साथ वैसा
ही नहीं लेकिन उस से भी अधिक करें।”
3 यह सुनते ही एलिय्याह अपनी जान बचाने
के लिए भागा। यहूदा के बेर्शेबा पहुँचते ही
उसने अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया 4 खुद
वह एक दिन का रास्ता तय कर झाऊ के
एक पेड़ के नीचे जा बैठा। वहाँ वह मौत
की भीख माँगने लगा, “हे प्रभु, बहुत हुआ,
मेरी जान ले लीजिए। मैं अपने पूर्वजों से
बेहतर नहीं हूँ।” 5 इसी बीच उसे नींद लग
गयी। एक स्वर्गदूत आया उसे छू कर बोला,
“उठो, कुछ खा लो।” 6 आँख खुलने पर
उसने देखा कि सिराहने पत्थरों पर पकी हुयी
रोटी और सुराही में पानी रखा है। वह उठा
खाया-पिया और फिर लेट गया। 7 दूसरी बार
फिर स्वर्गदूत ने उसे छू कर कहा, “उठो और
खाओ, क्योंकि तुम्हें लम्बी दूरी तय करनी
है।” 8 वह उठा भोजन किया और ताकत
पायी। उसी बल पर वह चालीस रात दिन
चलते-चलते प्रभु के होरेब पहाड़ पर पहुँच
गया। 9 वह एक गुफ़ा में जाकर टिक गया।
तभी प्रभु की वाणी उसने सुनी, “एलिय्याह,
तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” 10 उस का जवाब
था, “सेनाओं के प्रभु के लिए मुझे बहुत जलन
है। इस्राएलियों ने आपके साथ की गयी
प्रतिज्ञा को तोड़ दिया है। आपकी वेदियों
को तोड़ डाला है। आपके भविष्यद्वक्ताओं
का खून कर दिया है। केवल मैं अकेला बचा
हूँ। वे लोग मेरी जान के भी प्यासे हैं। 11 प्रभु
ने कहा, “बाहर आओ और मेरे पहाड़ पर
खड़े रहो।” और प्रभु परमेश्वर निकट से
होकर गुज़रे। प्रभु के सामने एक तेज आँधी से
पहाड़ फटने और चट्टाने टूटने लगीं। लेकिन
प्रभु उसमें नहीं थे। फिर एक भूकम्प आया।
उसमें भी प्रभु न थे। 12 भूकम्प के पश्चात् आग
दिखी, लेकिन उसमें भी प्रभु न थे। आग के
बाद एक दबी हुयी आवाज़ सुनायी दी 13 इस
आवाज़ को सुनते ही एलिय्याह ने अपने
चेहरे को चादर से ढाँक लिया और गुफ़ा
के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। तुरन्त इसके
बाद उसने फिर एक शब्द सुना, “एलिय्याह,
तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” 14 उसने कहा,
“सेनाओं के प्रभु के लिए मेरे मन में बड़ी
इज्ज़त[a] है। इस्राएलियों ने आपकी वाचा को
तोड़ा है। आपकी वेदियों को ढा दिया है।
आपके नबियों की जान ले ली है। अकेला
मैं ही बचा हूँ, वे मेरे पीछे भी पड़े हैं।
15 प्रभु ने उस से कहा, “दमिश्क के जंगल
को जाओ। वहाँ जाने के बाद हज़ाएल को
अराम का राजा होने के लिए 16 और निमशी
के बेटे येहू को इस्राएल का राजा होने के
लिए अभिषेक[b] करो। अपनी जगह पर नबी
होने के लिए आबेलमहोला के शापात के
बेटे एलीशा का अभिषेक करना 17 हज़ाएल
की तलवार से जो बचेगा, उसे येहू मार
डालेगा। जो कोई येहू की तलवार से बचे,
उसे एलीशा मार डालेगा। 18 फिर भी मैं सात
हज़ार इस्राएलियों को बचा-कर रखूँगा। ये
वे हैं, जिन्होंने न तो बाआल के आगे सिर
झुकाया और न मुँह से उसे चूमा है। 19 तब
वह वहाँ से चल दिया और शापात के बेटे
एलीशा से मिला। एलीशा उस समय बारह
जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए खुद बारहवीं
के साथ हल जोत रहा था। एलिय्याह ने
उसके ऊपर अपनी चादर डाल दी। 20 वह
एक दम बैलों को छोड़कर एलिय्याह के
पीछे भागा और बोला, “वापस जाकर अपने
माता-पिता को अलविदा कहने की इज़ाज़त
मुझे दो। उसके बाद मैं तुम्हारे साथ आ

[a] **19.14** जलन [b] **19.16** अलग

जाऊँगा” उसने कहा, वापस चले जाओ,
जैसा ठीक है, वैसा ही करो। 21 तब एलीशा
वापस चला गया। उसने एक जोड़ी बैल
कुर्बान किए। बैलों का सामान जला दिया।
उनका मांस पका कर लोगों को दे दिया।
लोगों ने उसे खाया। इसके बाद एलीशा कमर
बांध कर एलिय्याह के साथ हो लिया और
उसकी आवभगत करने लगा।

20 अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी
फ़ौज को तैयार किया। उसके पास
बत्तीस राजा, घोड़े और रथ थे। उन सभी
के साथ उसने शोमरोन पर हमला बोल
दिया और घेरा डाल कर युद्ध किया। 2 तब
उसने नगर में इस्राएल के राजा आहाब के
पास यह कहने को भेजा, “बेन्हदद तुम से
यह कहता है। 3 तुम्हारा सोना-चाँदी मेरा है।
तुम्हारी सुन्दर महिलाएँ और अच्छे बच्चे मेरी
सम्पत्ति है।” 4 इस्राएल के राजा ने उस से
कहा, ‘हे मेरे मालिक। हे राजा। तुम्हारे शब्दों
के अनुसार मैं और जो मेरा है, सभी कुछ
तुम्हारा है।” 5 उन्हीं सन्देश वाहकों ने आकर
बताया कि, बेन्हदद का कहना यह है, “मैंने
तुम्हें यह बताया था कि तुम्हें सोना-चाँदी,
स्त्रियों और बच्चे देने पड़ेंगे’ 6 कल इसी वक्त
मेरे कर्मचारी तुम्हारे यहाँ आएँगे। वे तुम्हारे
और तुम्हारे कर्मचारियों के घरों में ढूँढ-ढाँढ
करेंगे। जो-जो अच्छी चीजें वे पाएँगे, उन्हें
वे अपने साथ यहाँ लेकर आएँगे।” 7 तब
इस्राएल के राजा ने अपने देश के बुज़ुर्गों को
बुलवाकर कहा, “जरा सोचो, यह आदमी
हमें नुकसान पहुँचाना चाहता है। उसने मुझ
से मेरी स्त्रियों, बच्चों और चाँदी सोने की
माँग की है, लेकिन मैंने मना कर दिया है।”
8 तब सभी बुज़ुर्गों और दूसरे लोगों ने भी यह
सलाह दी, कि वह उसकी न सुने। 9 तब राजा
ने बेन्हदद के दूतों से कहा, “मेरे मालिक
राजा से मेरे पक्ष में कहो, “जो कुछ तुमने
पहले अपने दास से चाहा था, वह मैं करूँगा,
लेकिन यह मैं न कर पाऊँगा” तब बेन्हदद के
दूतों ने जाकर यह समाचार दे दिया। 10 फिर
बेन्हदद ने यह समाचार आहाब को भेजा,
“यदि शोमरोन में इतनी मिट्टी हो, कि मेरे सभी
पीछे चलने वालों की मुट्ठी भर जाए तो देवता
मेरे साथ ऐसा ही नहीं, इस से ज़्यादा करें।”
11 इस्राएल के राजा ने कहा, “जाकर उस
से कह दो, “जो हथियार बान्धता है, वह
उसकी तरह घमण्ड न करे जो उन्हें उतार
देता है।” 12 जब वह दूसरे राजाओं के साथ
पी रहा था, यह बात उसके कान में पड़ी।
वह अपने कर्मचारियों से बोल उठा, “तैयार
हो जाओ।” और वे तैयार हो गए। 13 तब
एक नबी ने इस्राएल के राजा आहाब के
पास जाकर कहा, “प्रभु का कहना यह है,
“यह बड़ी भीड़ जो तुम देख रहे हो, उसे
मैं तुम्हारे वश में कर दूँगा। तब तुम जान
जाओगे, कि मैं प्रभु हूँ।” 14 आहाब बोल
उठा, “किस के द्वारा” उसने कहा, “प्रभु
का कहना यह है, “प्रदेश के गवर्नरों के
सेवकों के द्वारा।” फिर उसने कहा, “युद्ध की
शुरूआत कौन करेगा?” उसने जवाब दिया,
“तुम।” 15 तब उसने प्रदेशों के गवर्नरों के
सेवकों को गिन लिया। संख्या में वे दो सौ
बत्तीस थे। इसके बाद सारे इस्राएलियों को
गिना गया। वे गिनती में सात हज़ार थे। 16 ये
दोपहर में रवाना हो गए। उस समय बेन्हदद
अपने संगी साथियों के साथ शराब के नशे
में धुत था। 17 प्रदेशों के गवर्नरों के सेवक
पहले निकल पड़े थे। इसके बाद बेन्हदद ने
दूत भेजे। उन्होंने उस से कहा, शोमरोन से
कुछ लोग चले आ रहे हैं।” 18 वह बोला,
“चाहे वे मेल की मनसा से आएँ या लड़ने के

लिए, उन्हें ज़िन्दा पकड़ लिया जाए।" 19 तब
प्रदेशों के गर्वनरों के सेवक और उनके पीछे
की फ़ौज के सिपाही नगर से निकले। 20 वे
अपने-अपने सामने के आदमी को मारने लगे।
जैसे ही अरामी भागे, इस्राएली उनका पीछा
करने लगे। अराम का राजा बेन्हदद सवारों
के साथ घोड़े पर चढ़कर भाग निकला।
21 तब इस्राएल के राजा ने भी घोड़ों और
रथों को मारा और अरामी बड़ी संख्या में
हताहत हुए। 22 तब वह नबी इस्राएल के
राजा के पास जाकर कहने लगा, "जाकर
लड़ाई की हिम्मत रखो। सोचो क्या करना।
नए साल के शुरू होते ही अराम का राजा
तुम्हारे ऊपर हमला करेगा 23 तब अराम के
राजा के कर्मचारियों ने उस से कहा, उनके
पास पहाड़ी देवता है, इसलिए वे हम से
जीत गए। यदि हम मैदानी जंग लड़े तो हम
ही जीतेंगे। 24 हाँ एक और काम तुम्हें करना
चाहिए वह यह कि सभी राजाओं को पद से
हटा कर उनकी जगह सेनापतियों को ठहरा
दो 25 तुम्हारी बर्बाद हुयी सेना की जगह
दूसरी सेना तैयार करो, गिनती कर लो, फिर
मैदानी जंग की जाए, हम ज़रूर कामयाब
हो जाएँगे। बेन्हदद ने सलाह मान ली और
वैसा ही किया 26 नए साल के आरम्भ ही
में बेन्हदद ने अरामियों को एक जगह पर
इकट्ठा करके इस्राएलियों से युद्ध करने अपेक
गया। 27 इस्राएली इकट्ठे हुए, उनके भोजन
की व्यवस्था की गयी। फिर वे उन से मुठभेड़
करने गए। उनके सामने इस्राएलियों ने डेरे
डाले। वे बकरियों के दो छोटे झुण्ड की
तरह थे। देश तो अरामियों से भर गया था
28 तब प्रभु का वही जन इस्राएल के राजा
के पास जाकर बोला, "प्रभु का कहना है,
अरामियों के अनुमान से प्रभु पहाड़ी देवता
हैं और मैदानी इलाकों के नहीं। इस वजह
से मैं इस बड़ी भीड़ को तुम्हारे अधिकार
में कर डालूँगा। तब तुम भी जान जाओगे
कि मैं प्रभु हूँ।" 29 सात दिन तक वे तम्बू
डाल कर आमने सामने टिके रहे। सातवें
दिन जंग छिड़ गयी। एक दिन में इस्राएलियों
ने एक लाख सिपाहियों को मौत के घाट
उतार दिया। 30 बचे हुए अपेक में जा घुसे।
वहाँ उन बचे हुए लोगों में से सत्ताईस हज़ार
आदमी शहरपनाह की दीवार गिरने से दब
कर मर गए। बेन्हदद भाग कर भीतरी कमरे
में घुस गया। 31 तब उसके कर्मचारी उस से
बोले, "सुनो हमारे कानों तक यह बात पहुँच
चुकी है कि इस्राएली राजा तरस से भरे होते
हैं। इसलिए हमें कमर में टाट और सिर पर
रस्सियाँ बाँधे हुए इस्राएल के राजा के पास
जाने दो। यह हो सकता है कि वह तुम्हारी
जाने बचा ले। 32 तब उन्होंने कमर में टाट
बान्धा और सिर पर रस्सियों और इस्राएल
के राजा के पास जाकर कहा, "तुम्हारे दास
बेन्हदद की बिनती है, "मुझे ज़िन्दा रहने
दो।" राजा का उत्तर था, "क्या वह अभी
तक ज़िन्दा है? वह तो मेरा भाई है।" 33 उन
लोगों ने इसे अच्छा संकेत (इशारा) जान
कर तुरन्त जान लेना चाहा, कि यह उसके
मन में है या नहीं और कहा, "हाँ तेरा भाई
बेन्हदद।" राजा बोला, "उसे ले आओ।" तब
बेन्हदद उसके पास से चला गया और उसने
उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया। 34 बेन्हदद उस
से बोला, "मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से जो
नगर ले लिए थे, उन्हें मैं वापस कर दूँगा।
जिस तरह से मेरे पिता ने शोमरोन में खुद
के लिए सड़कें बनवायी थीं, वैसे ही तुम
दमिश्क में बनवाना।" आहाब बोल उठा,
"इसी वाचा पर मैं तुम्हें बरी करता हूँ।"
तब बेन्हदद से उसने वाचा बाँधी और उसे
आज़ाद कर दिया। 35 इसके बाद नबियों के

शिष्यों में से एक ने प्रभु से संदेश पाकर अपने
संगी से कहा, “मुझे मारो।” जब उस आदमी
ने उसे मारने से इन्कार किया 36 तब उसने
उस से कहा, “तुमने प्रभु की बात नहीं मानी
है, इसलिए सुनो, जैसे ही तुम मेरे पास से चले
जाओगे, वैसे ही एक शेर तुम्हें मार डालेगा।
तब जैसे ही वह उसके पास से चला गया,
वैसे ही रास्ते में एक शेर ने उसे मार डाला।
37 फिर एक दूसरा व्यक्ति मिला। उसने उस
से भी कहा, “मुझे मारो।” उस आदमी ने उसे
ऐसा मारा, कि वह ज़ख्मी हो गया। 38 इसके
बाद वह नबी चला गया। आँखों को पगड़ी
से ढाँप कर वह राजा का इन्तज़ार करता रहा
39 राजा के निकट से जाते समय, उसने गुहार
लगायी, “जब तुम्हारा दास जंग के मैदान में
गया हुआ था, तब एक आदमी किसी आदमी
को मेरे पास लाया और कहा, “इस आदमी
की निगहबानी करो। यदि तुम न कर सके
तो तुम्हारी जान जाएगी। नहीं तो तकरीबन
34 कि.ग्रा.चाँदी देनी पड़ेगी। 40 उसके बाद
तुम्हारा दास कुछ काम में फँस गया, फिर
वह नहीं मिला।” इस्राएल का राजा उस से
बोला, तुम्हारा इन्साफ़ ऐसा ही होगा, तुमने
खुद अपना इन्साफ़ किया है। 41 नबी ने तुरन्त
अपनी आँखों से पगड़ी हटायी। राजा ने उसे
पहचान लिया कि वह कोई नबी है 42 तब
वह राजा से बोला, “प्रभु तुम से यह कहते हैं,
इसलिए कि तुमने अपने हाथ से ऐसे आदमी
को जाने दिया, जिसे मैं बर्बाद करना चाहता
या तुम्हें उसकी जान के बदले अपनी जान
और उसकी प्रजा के बदले अपनी प्रजा देनी
पड़ेगी।” 43 तब इस्राएल का राजा दुखी हुआ
और वापस लौटकर शोमरोन को आ गया।

21 यिज़्रेल में नाबोत नामक एक व्यक्ति
का अंगूर का बगीचा शोमरोन के
राजा आहाब के राज मन्दिर के पास था
2 एक दिन राजा ने नाबोत से कहा, “बगीचा
मेरे घर के पास है, उसे मुझे दे दो। मैं
उसमें साग-सब्ज़ी उगाना चाहता हूँ। मैं उसके
बदले में तुम्हें उस से अच्छा बगीचा दे दूँगा।
और यदि तुम कहो तो मैं उसकी कीमत दे
दूँगा। 3 नाबोत राजा से बोला, “अपने पूर्वजों
की ज़मीन मैं नहीं देना चाहूँगा। 4 यिज़्रेली
नाबोत के इन शब्दों को सुन कर आहाब
दुखी हुआ और अपने घर चल पड़ा। घर
पर आकर बिना खाना खाए बिस्तर पर लेट
गया 5 इसी बीच उसकी पत्नी ने उसकी
उदासी का कारण पूछा, “तुम उदास क्यों हो
और खाना क्यों नहीं खा रहे हो?” 6 आहाब
बोला, “मैंने नाबोत से कहा कि वह अपने
बगीचे के बदले मुझ से एक बगीचा या
बदले में पैसा ले ले, लेकिन वह राजी नहीं
हुआ।” 7 उसकी पत्नी इज़ेबेल बोली, “क्या
तुम इस्राएल के राजा नहीं हो? उठो, खाना
खाओ और खुश रहो। नाबोत का बगीचा
तुम्हें मैं दिलवा दूँगी।” 8 इज़ेबेल ने आहाब के
नाम से चिट्ठी लिखी और आहाब की मोहर
लगवा कर पुरनियों और रईसों के पास भेज
दी, जो उसी नगर में नाबोत के पड़ोसी थे।
9 चिट्ठी में लिखा था, “उपवास का ऐलान
करो और नाबोत को लोगों के सामने ऊँची
जगह पर बैठाना 10 तब दो नीच जनों को
उसके सामने बैठाना जो गवाही देकर उस
से कहें, “तुमने प्रभु और राजा, दोनों ही की
बेइज्ज़ती की है। तब तुम लोग उसे बाहर
ले जाकर पत्थरों से मार डालना 11 इज़ेबेल
की आज्ञा मानकर उपवास का ऐलान किया
गया 12 नाबोत को लोगों के सामने ऊँचाई
पर बैठाया गया 13 इसके बाद दो नीच जन
आकर उसके सामने बैठ गए। उन नीच जनों
ने लोगों के सामने नाबोत के खिलाफ़ यह

गवाही दी, “नाबोत ने प्रभु और राजा दोनों
ही की निन्दा की है।” फिर लोग उसे नगर
से बाहर ले गए, और पत्थरवाह करके मार
डाला 14 तब उन्होंने इज़ेबेल को उसकी मौत
का समाचार दे दिया। 15 यह खबर मिलते
ही इज़ेबेल आहाब से बोली, “उठो, नाबोत
मर चुका है, इसलिए जाकर उसके बाग
को अपने अधिकार में कर लो।” 16 आहाब
तुरन्त जाने के लिए तैयार हुआ 17 तब प्रभु
का संदेश तिशबी एलिय्याह के पास आया,
18 आहाब से मिलने जाओ, वह नाबोत के
अंगूर के बगीचे में पहुँच चुका है ताकि
उसे हड़प ले। 19 उस से बोलना, ‘प्रभु का
वचन यह है कि तुमने हत्या की और ज़मीन
हड़प ली। जिस जगह पर कुत्तों ने नाबोत
का खून चाटा है, वहीं पर तुम्हारा खून कुत्ते
चाटेंगे। 20 एलिय्याह को देखते ही आहाब ने
कहा, “मेरे दुश्मन, तुम्हें मेरा पता लग गया
है?” उसने कहा, हाँ लग गया है। इसका
कारण यह है कि जो प्रभु की दृष्टि में बुरा है,
उसको करने के लिए तुमने अपने आपको
बेच डाला है। 21 मैं तुम्हारे ऊपर मुसीबत
डाल कर बर्बाद कर डालूँगा। आहाब के
परिवार के एक-एक बच्चे को, गुलाम आज़ाद
और हर एक को नाश कर डालूँगा 22 तुम्हारे
परिवार को मैं नबात के बेटे यारोबाम और
अहिय्याह के बेटे बाशा की तरह कर दूँगा,
क्योंकि तुमने मुझे गुस्सा दिलाया है। तुमने
इस्राएल से अपराध करवाया है। 23 इज़ेबेल
के बारे में, प्रभु यह कहते हैं, यिज्रेल किले
के पास कुत्ते उस को खा जाएँगे। 24 आहाब
का जो कोई नगर में मरेगा, उसे कुत्ते खाएँगे।
जो मैदान में मर जाएगा, उसे आकाश की
चिड़ियाँ खा लेंगी। 25 सच पूछा जाए तो
आहाब की तरह ऐसा कोई नहीं था, जिस
ने अपनी पत्नी के उकसाने पर बुरा काम
करने के लिए अपने आपको बेच डाला
था 26 एमोरियों की तरह वह था, जिन्होंने
घिनौने काम अर्थात् मूर्तिपूजा की थी। उन्हें
इस्राएलियों के देखते-देखते, प्रभु ने देश से
निकाला था 27 एलिय्याह की ये बातें सुन कर
आहाब ने अपने कपड़े फाड़े। वह अपनी देह
पर टाट ओढ़ कर पड़ा रहा और धीरे-धीरे
चलने लगा। 28 तब प्रभु की वाणी एलिय्याह
को सुनायी दी, 29 “क्या तुमने गौर किया है,
कि आहाब दीन बन गया है। अब मैं वह
मुसीबत उसके जीते जी नहीं डालूँगा, लेकिन
उसके बेटे के दिनों में उसके परिवार पर वह
मुसीबत भेजूँगा।

22 तीन साल तक अरामी और
इस्राएलियों के बीच जंग नहीं हुयी।
2 तीसरे साल के अन्त में यहूदा का राजा
यहोशापात इस्राएल के राजा के पास गया।
3 इस्राएल के राजा ने अपने कर्मचारियों से
कहा, “क्या तुम जानते हो कि गिलाद का
रामोत हमारा है? फिर हम खामोश क्यों बैठे
हैं और अराम से हथिया क्यों नहीं लेते हैं?
4 उसने यहोशापात से सवाल किया, क्या
युद्ध करने के लिए तुम मेरे साथ गिलाद के
रामोत चलोगे? यहोशापात ने उत्तर दिया,
“जैसे तुम हो, वैसा मैं भी हूँ। जैसी तुम्हारी
प्रजा है, वैसी मेरी भी है। जिस तरह के
घोड़े तुम्हारे हैं, वैसे ही मेरे भी हैं। 5 फिर
यहोशापात इस्राएल के राजा से बोला,
“प्रभु परमेश्वर की इच्छा मालूम करो।”
6 तब इस्राएल के राजा ने लगभग चार सौ
नबियों को इकट्ठा करके पूछा, “क्या मैं
गिलाद रामोत पर हमला करूँ?” नबियों ने
कहा,“हाँ कर दो, क्योंकि प्रभु उसे तुम्हारे
हाथ में कर देंगे।” 7 यहोशापात ने सवाल
किया, “यहाँ प्रभु का कोई और नबी भी है

क्या? जिस से हम जान सकें?" 8 इस्राएल
के राजा यहोशापात ने कहा, "हाँ यिम्ला का
बेटा मीकायाह है, जो प्रभु की वाणी को
हम तक पहुँचा सकता है। लेकिन मैं उस
से नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह सदा मेरे
नुकसान की बात कहता है।" 9 यहोशापात
बोला, "ऐसा मत कहो।" तब इस्राएल
के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर,
यिम्ला के बेटे मीकायाह को लाने के लिए
कहा। 10 इस्राएल का राजा और यहूदा का
राजा यहोशापात शाही कपड़े पहनकर
अपने-अपने तख्त विराजमान थे। सभी
नबी वहाँ सामने नबूवत कर रहे थे 11 तब
कनाना के बेटे सिदकिय्याह ने लोहे के
सींग बना कर कहा, "प्रभु का कहना यह
है। इन से तुम अरामियों को बर्बाद कर
डालोगे।" 12 दूसरे सभी नबियों ने भी ऐसी
भविष्यवाणी की, "गिलाद के रामोत पर
हमला कर दो और जीत जाओ, क्योंकि
प्रभु उसे राजा के वश में कर देगा।" 13 जो
आदमी मीकायाह को बुलाने गया था उसने
उस से कहा, "सुनो, एक मुँह से नबी राजा
के लिए अच्छे शब्द कहते हैं। इसलिए
तुम्हारे शब्द वैसे ही हों। तुम भी खुश करने
वाले शब्द कहना 14 मीका बोला, "मुझ से
जो प्रभु कहेंगे, वही कहूँगा।" 15 राजा के
पास आने के बाद, राजा ने प्रश्न किया,
"मीका, क्या हम गिलाद के रामोत पर
हमला बोल दे, या इन्तज़ार करें?" उत्तर में
उसने कहा, "हाँ, कर डालो, तुम जीतोगे।
16 राजा उस से बोला, "मैं तुम्हें कितनी बार
बताऊँ कि तुम प्रभु को याद करके मुझ
से सच बोलो 17 मीकायाह ने कहा, "पूरा
इस्राएल मुझे बिना चरवाहे की ऐसी भेड़
बकरियों की तरह दिखा, जो पहाड़ पर
बिखर गयी हों। मैंने प्रभु की आवाज़ भी
सुनी, "वे अनाथ हैं, इसलिए अपने-अपने
घर लौट जाएँ 18 तब इस्राएल का राजा
यहोशापात से बोला, "क्या तुम से मैंने नहीं
कहा था कि यह आदमी मेरे लाभ की, नहीं
नुकसान की नबूवत करेगा।" 19 मीका ने
कहा, "इसलिए तुम प्रभु की बात मानो।
मुझे राजासन पर बैठे प्रभु और उनके पास
दाएँ-बाएँ खड़ी स्वर्ग की पूरी फ़ौज दिखायी
दी है। 20 तब प्रभु ने सवाल किया, "कौन है
जो आहाब को बहका सकता है, कि वह
गिलाद के रामोत पर हमला बोले? सभी की
राय अलग-अलग थी 21 अन्त में एक आत्मा
पास आयी और प्रभु के सामने खड़ी हो गयी
और कहा, "उसे मैं बहकाऊँगी।" प्रभु ने
पूछा, किस तरह से?" 22 वह बोली, "मैं
उसके सभी भविष्यद्वक्ताओं में समा जाऊँगी
और झूठ कहलवाऊँगी। प्रभु ने कहा,
"जाओ अपने काम में तुम सफल हो।"
23 अब सुनो, प्रभु ने तुम्हारे इन सभी नबियों
के मुँह में झूठ बोलने वाली आत्मा बैठा दी[a]
है। प्रभु ने तुम्हारे नुकसान की ही बात कही
है। 24 तब कनाना के बेटे सिदकिय्याह ने
मीकायाह के पास जाकर गाल पर थप्पड़
जड़ते हुए पूछा, "प्रभु का आत्मा मुझे
छोड़कर तुम्हारे पास कैसे चला गया?"
25 मीकायाह बोला, "जिस दिन तुम अपनी
जान बचा-कर इधर से उधर भागोगे, तब
तुम्हें पता चल जाएगा।" 26 तब इस्राएल का
राजा बोला, "गवर्नर आमोत और योआश
राजकुमार के पास मीकायाह को ले जाओ
27 उन से कहो, राजा की आज्ञा यह है कि
इसे जेल में डालो और जब तक मैं अच्छे से
वापस न आ जाऊँ, तब तक इसे पीड़ा का
खाना खिलाओ।" 28 मीका ने कहा, "यदि

[a] **22.23** आने दिया

तुम अच्छे से लौटो तो समझ लेना कि प्रभु
ने अपना संदेश मुझ से नहीं कहलवाया।"
फिर उसने कहा, "हे लोगो, तुम सभी मेरी
बात पर कान लगाओ।" 29 तब इस्राएल के
राजा और यहूदा के राजा यहोशापात दोनों
ही ने गिलाद के रामोत पर हमला बोल
दिया। 30 इस्राएल के राजा ने यहोशापात से
कहा, "अपनी हुलिया बदल कर मैं लड़ाई
के मैदान में जाने वाला हूँ, लेकिन तुम अपने
कपड़े ही पहने रहना।" इस्राएल के बादशाह
ने अपना भेष बदला और फिर लड़ाई के
मैदान में गया। 31 अराम के राजा ने अपने
रथों के बत्तीस प्रधानों को आदेश दिया
था, "राजा को छोड़ किसी और से युद्ध न
करना।" 32 इसलिए जब रथों के मुखिया ने
यहोशापात राजा को देखा, तब कहा, "यही
इस्राएल का राजा है।" यह सुनते ही सब
उस पर टूट पड़े और यहोशापात घबरा कर
चिल्लाया। 33 यह देख कर कि वह सचमुच
में इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के सवार
वापस आ गए। 34 तब किसी ने यों ही तीर
चला दिया और वह इस्राएल के राजा के
झिलम और निचले पहरावे के बीच लगा।
उसने अपने सारथी से कहा, "मैं ज़ख्मी
हो गया हूँ इसलिए मुझे फ़ौज में से बाहर
निकाल लो।" 35 उस दिन लड़ाई चलती
रही और राजा अपने रथ में दूसरों के सहारे
अरामियों के सामने खड़ा रहा। शाम को वह
मर गया और उसके ज़ख्म का खून बह कर
रथ के पायदान में मर गया। 36 सूर्यास्त के
समय फ़ौज में आवाज़ सुनायी दी, "हर एक
जन अपने नगर और अपने देश को चला
जाए।" 37 राजा के मरने के बाद शोमरोन
में दफ़ना दिया गया 38 प्रभु के शब्द के
अनुसार जब उस का रथ शोमरोन के पोखरे
में धोया गया, कुत्तों ने आकर उस का खून
चाट लिया। इसी पोखरे में यौन व्यापार में
लगी महिलाएँ नहाया करती थीं। 39 आहाब
के सभी कामों और हाथी दाँत के भवन के
निर्माण की बात क्या इस्राएल के राजाओं
की किताब में नहीं हैं? 40 आहाब के देहान्त
के बाद उस का बेटा अहज्याह उसकी
जगह राज्य करने लगा। 41 इस्राएल के राजा
आहाब के चौथे साल में आसा का बेटा,
यहोशापात यहूदा पर शासन करने लगा।
42 यहोशापात की उम्र पच्चीस साल ही थी,
जब उसने राज्य की बागडोर अपने हाथ में
ली। शिल्ही की बेटी अज़ूबा उसकी माँ थी।
43 अपने पिता आसा की तरह यहोशापात
का जीवन चरित्र था। वह जीवन भर प्रभु
का आज्ञाकारी रहा। लेकिन ऐसा कदम न
उठाया, जिस से ऊँचे स्थान बर्बाद किए
जाते। इन ऊँचे स्थानों पर धूप जलाने के
साथ, कुर्बानी की जाती थी। 44 यहोशापात
ने इस्राएल के राजा से मित्रता कर ली।
45 यहोशापात के काम जो उसकी बहादुरी
और युद्ध आदि के बारे में क्या यहूदा के
राजाओं की किताब में लिखे हैं। 46 उसके
पिता के राज्य के समय से जो पुरुषगामी
लोग बच गए थे, उनको उसने मारा नहीं।
47 इन दिनों एदोम में कोई बादशाह नहीं
था। एक नायब राज-पाट सम्भाल रहा था।
48 यहोशापात ने तभी सोना लाने के लिए
तर्शीश के जहाज़ ओपीर जाने के लिए
बनवाए। ये जहाज़ एश्योनगेबेर में ही नष्ट हो
गए और वहाँ पहुँच न सके। 49 तब आहाब
के बेटे अहज्याह ने यहोशापात से कहा,
"मेरे जहाज़ियों को अपने जहाज़ियों के साथ
जहाज़ों में जाने दो।" लेकिन यहोशापात ने
इस बात से इन्कार कर दिया 50 अन्त में
यहोशापात मर गया और उसे भी दाऊद के
नगर में दफ़ना दिया गया। उसकी जगह

पर उस का बेटा यहोराम गद्दी पर बैठा।
51 यहूदा के राजा यहोशापात के सत्रहवें
साल में आहाब का बेटा अहज्याह शोमरोन
में इस्राएल पर शासन करने लगा उसने
दो साल तक राज्य किया। 52 वह वही
करता रहा, जो प्रभु को पसन्द नहीं था।
नबात के बेटे यारोबाम की तरह उस का
भी चालचलन था। 53 उस का पिता बाल
की पूजा करता था, जिस से प्रभु का गुस्सा
भड़कता था। ठीक उसी तरह अहज्याह भी
करता रहा।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com